॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
May Almighty Illuminate our intellect and inspire us towards the righteous path.
सकारात्मक परिवर्तन का संवाहक पत्र

संस्कृति संचार

RNI- UTTBIL/2014/57984

। देव संस्कृति विश्वविद्यालय (हरिद्वार, उत्तराखंड) । । अक्टुबर-२०१६ । वर्ष ०३, नवरात्रि विशेषांक, पृष्ठ ०८ । । मूल्य :₹ ५.०० ।

कुलाधिपति की गीता-ध्यान कक्षाएं : देसंविवि के विशिष्ट प्रयोग

शिक्षा के साथ विद्या

• पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र

युग ऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य के विजन एवं दर्शन पर आधारित देवसंस्कृति विश्वविद्यालय शिक्षा के साथ विद्या के प्रयोग का एक अभिनव उच्च शिक्षा केंद्र है। उद्देश्य एक ही है, युवा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना जिसमें विषय की जानकारी के साथ जीवन को एक कलाकार की भांति जीने की कला का विकास शामिल है। रोजी रोटी कमाने वाली भौतिक, वैज्ञानिक एवं प्रोफेशनल शिक्षा के साथ व्यक्तित्व के भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करने वाली विद्या के प्रयोग भी यहाँ की शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।

कुलाधिपति की गीता एवं ध्यान की कथाएं इसमें प्रमुख है। हर सप्ताह गुरुवार के दिन इनकी नित्य कथाएं चलती है जिनमें विद्यार्थियों से लेकर विवि के सभी लोग भाग लेते है। वर्ष भर की शारदीय एवं आश्विन नवरात्र की दो संधियों में इनकी विशिष्ट नौ दिवसीय कथाएं अपने आप में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। शायद ही किसी विश्वविद्यालय में कुलाधिपति द्वारा ऐसा आध्यात्मिक प्रयोग सम्पन्न किया जा रहा हो।

नौ रात्रि की विशेष संधि वेला में जब प्रकृति के गहन अंतराल में सूक्ष्म परिवर्तन चल रहे होते हैं, ऐसे स्वाध्याय, सत्संग प्रधान आध्यात्मिक प्रयोग विवि परिसर में एक सतोगुण प्रधान साधनात्मक वातावरण का सृजन करते हैं। इन कथाओं में अध्यात्म की गहराईयों को सरल, सहज ढंग से समझाया जाता है, प्रेरक कथाओं, संस्मरणों के साथ इन्हें यथासंभव ग्राह्य एवं रोचक बनाने का प्रयास रहता है। गीता जैसे कालजयी ग्रंथ में विद्यमान योगीराज श्रीकृष्ण के शाश्वत संदेश को सामयिक परिप्रेक्ष्य में रोचक ढंग से पेश किया जाता है। इसके साथ प्रतिभागियों में एक नई जीवन दृष्टि का विकास होता है।

निश्चित रुप से इन कथाओ से जीवन, व्यक्तित्व एवं अस्तित्व के मूल स्वरुप, मर्म एवं बारीकियों की बौद्धिक समझ विकसित होती है। जीवन में मानसिक तनाव एवं भावनात्मक विक्षोभ के मूल में सक्रिय कारकों के जड़मूल उपचार की प्रक्रिया सम्पन्न होती है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का खालीपन

शिक्षा किसी व्यक्ति को अच्छी नौकरी तो दिला सकती है परंतु उसकी सामाजिक समझदारी की गारंटी नहीं दे सकती। जब पढ़ा-लिखा एक प्रशिक्षित युवा आतंकी घटनाओं में पकड़ा जाता है, अपराधए भ्रष्टाचार और अनैतिक गतिविधियों में संलिप्त पाया जाता है, तो सभ्य समाज, इस आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर अनायास ही कई सवाल खड़े करने लगता है। बाकि यह भी सच है कि संस्कृति, सभ्यता, मर्यादा, विवेक और ज्ञान जैसे शब्द आधुनिक शिक्षा की किताबों में मात्र कोरे वाक्यों के रूप में मिलते हैं। नर्सरी के बाल मन से, स्नातक के विद्वान युवा बनने तक की जटिल प्रक्रिया को अगर गौर से देखें, तो यहां सब कुछ होते हुए भी खालीपन सा दिखता है। यह उदासी जानकारी की कमी की वजह से नहीं बल्कि जीवन के सवालों का समाधान न खोज पाने के कारण है। आज समाज में मनोरोग, आत्महत्या, बलात्कार, अविश्वास जैसे गंभीर एवं चिंतनीय मर्ज का इलाज तो हर कोई खोज रहा है लेकिन इसकी जड़ को कोई खोट नहीं पा रहा है।

देसंविवि की एक अभिनव पहल -

इन्हीं बीमारियों और बुराइयों को जड़ से उखाड़ने के लिए शांतिकुंज स्थित देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में 2004 से अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख व विवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पंड्या ने साप्ताहिक गीता व ध्यान की कथा की शुरूआत की। तब से यह कथा लगातार चलती आ रही ह, जिससे युवाओं को भटकन की जगह एक नई राह मिल रही है। अब वे संस्कृति, सभ्यता, मर्यादा, विवेक और ज्ञान जैसे शब्द सिर्फ पढ़ते नहीं बल्कि अनुभव भी करते हैं। और मानसिक स्तर पर अपने आप को मजबूत बना रहे है।

भारतीय संस्कृति और साहित्य से परिचय

गीता के श्लोकों पर आधारित कथा में ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्ति योग, दर्शन के गूढ तत्वों, वेदों की ऋचाओं की सरल व सुन्दर ढंग से व्याख्या की जाती है, जिससे कि आम जन की समझ में भारतीय संस्कृति व साहित्य का सही अर्थ सरल व शुद्ध तरीके से आ सके।

12 साल से लगातार फैला रहे सद्ज्ञान

वर्ष 2004 से अनवरत गीता व ध्यान की कथा चल रही है। अब तक हजारों विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो चुके हैं। और अपने जीवन में सद्विवेक, सद्बुद्धि व सद्ज्ञान का आरोपण कर रहे हैं। युवाओं को तमोगुण व रजोगुण से निकाल कर सतोगुण की ओर मार्गदर्शन कर रहे हैं।

नवरात्रि विशेष कथा

चैत्र नवरात्रि में रामचरित मानस व शारदीय नवरात्रि में श्रीमद्भगवत् गीता की विशेष कथा चलती हैं जिसमें कि किसी विशेष विषय को लिया जाता है और उस पर गहराई से व्याख्या की जाती है। अब तक लगभग 216 से अधिक नवरात्रि की विशेष कथाएं चल चुकी है। मानव जीवन में शक्ति और साधना, विवेक और संवेदना के महत्व को बतलाया जाता है।

ध्यान की कथा

ध्यान के अंतर्गत अब तक ज्योति अवतरण की ध्यान साधना, सूर्य का ध्यान, अंतः त्राटक के माध्यम से आज्ञाचक्र का जागरण आत्मानुभूति योग के माध्यम से ध्यान, आकाश का ध्यान, सूर्यमध्य में गायत्री मां का ध्यान, उपनिषद मंत्र का अर्थ ,परामनोवैज्ञानिक शक्तियों का जागरण, आलोक मय उपस्थिति का ध्यान, एक की अनुभूति का ध्यान, आज्ञाचक्र का ध्यान, अंधकार के माध्यम का ध्यान, अंतस चेतना में प्रकाश का बीज बोने का ध्यान, भगवान के अंदर प्रवाहित होने का ध्यान संस्कारों पर छाये हुए मैल को हटाने का ध्यान जैसे सैकड़ों गंभीर व व्यक्ति के जीवन में मुख्य भूमिका निभाने वाले लगभग 160 से अधिक विषयों पर ध्यान की कथा आयोजित की जा चुकी है।

गीता की इन कथा ओं को युवाओं म`

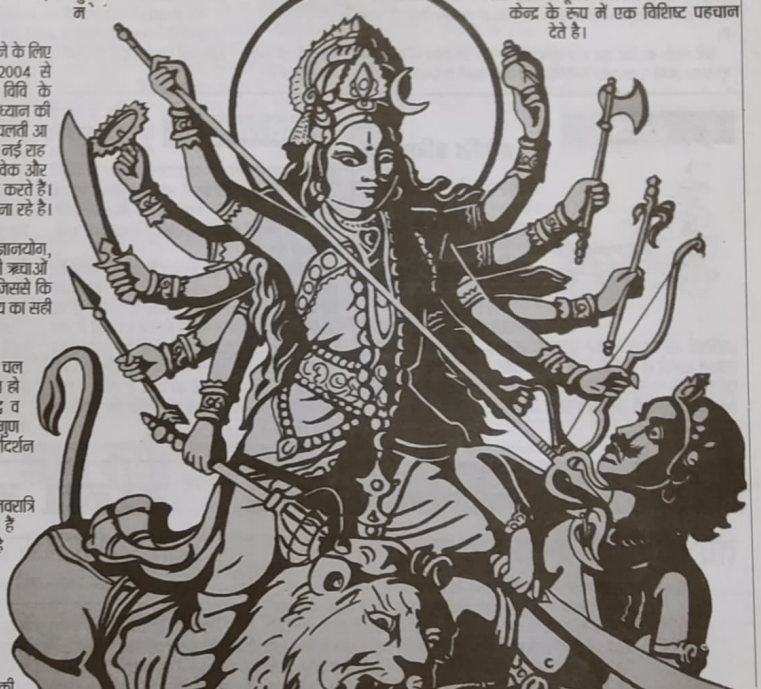

वर्तमान समस्याओं के समाधान

गीता के माध्यम से खोजने का एक सार्थक प्रयोग कह सकते हैं। गीता के माध्यम से मनुष्य को चिंता की जगह चिंतन करना सिखाया जा रहा है। मोह माया से दूर जाकर अध्यात्मपरक मानवतावाद की सीख दी जा रही है। निसंदेह शिक्षा के साथ विद्या के ये प्रयोग देसविवि को मूल्यपरक शिक्षा के उच्च शिक्षा केन्द्र के रूप में एक विशिष्ट पहचान देते है।

नवदुर्गा के नौ रुपों में एक स्त्री के पूरे जीवनचक्र का भगवती रूप दर्शन

जन्म ग्रहण करती हुई कन्या शैलपुत्री स्वरूप है।

संतान को जन्म देने के बाद वही स्त्री स्कन्दमाता हो जाती है।

अपने संकल्प से पति की अकाल मृत्यु को भी जीत लेने से वह कालरात्रि है।

कौमार्य अवस्था तक ब्रह्मचारिणी का रूप है।

जीव को जन्म देने के लिए गर्भ धारण करने पर वह कूष्मांडा स्वरूप में है।

संसार, कुटुंब ही उसके लिए संसार है। का उपकार करने से महागौरी हो जाती है।

विवाह से पूर्व तक चंद्रमा के समान निर्मल होने से वह चंद्रघंटा समान है।

संयम व साधना को धारण करने वाली स्त्री कात्यायनी रूप है।

स्वर्ग प्रयाण करने से पहले संसार में संतान को सिद्धि, सुख-संपदा का आशीर्वाद देने वाली सिद्धिदात्री हो जाती है।

जड़ता से चेतना की यात्रा है ज्ञान

श्रद्धेय कुलाधिपति जी ने शारदीय नवरात्र के प्रथम दिन, गीता के चौथे अध्याय के 34वें श्लोक को समझाते हुए ज्ञान की महिमा का वर्णन किया।

अश्विन नवरात्र में दुर्गा पूजा का आध्यात्मिक महत्व तो है ही और स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी, अगर हम इन दिनों संयम कर लें तो पूरे वर्ष स्वस्थ रह सकते हैं। शारदीय नवरात्र शक्ति एवं ज्ञान का पर्व है।

ज्ञान क्या है? क्यों जीवन में उतारना चाहिए और ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति कैसे होती है? मनुष्य के पास सबसे बड़ी संपत्ति ज्ञान है, विभिन्न तत्व दर्शन करके मनुष्य ने ज्ञान अर्जित किया है। गुरु के पास जाकर प्रश्न पूछने, उनकी सेवा करने से ही तत्वदर्शी गुरु हमें ज्ञान प्रदान करता है। गुरु तथा शिष्य के सम्मिश्रण से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान बुद्धि का नहीं बल्कि विवेक का परिणाम होता है। ज्ञान, संस्कृति, धर्म, विज्ञान, शक्ति, सभ्यता के रूप में मिलता है। अनुभूति के पीछे भी ज्ञान है, ज्ञान जैसा पवित्र कोई नहीं। ज्ञान गंगा से भी पवित्र है। ज्ञान दो प्रकार का होता है- भौतिक प्रकृति (प्रकृति का ज्ञान), पराप्रकृति (परमात्मा का ज्ञान)।

दीपक का वास्तविक स्रोत लौ है उसी प्रकार जीवन का आधारभूत तत्व परमात्मा है जो जड़ में भी चेतना ला देता है। ज्ञान विचारों का एकत्रीकरण नहीं यह हमारी अनुभूति है। विचार सिर्फ हमें मानसिक अभ्यास देते हैं परंतु अनुभव मनुष्य को स्वतंत्रता प्रदान करता है। ज्ञान की प्राप्ति से मनुष्य को आनंद आ जाता है जो तत्वज्ञानियों की संगति में ही मिल सकता है। ज्ञान अभ्यास मांगता है, बिना अभ्यास के व्यक्ति कुछ नहीं बन पाता। केवल पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान नहीं प्राप्त होता वरन् उसका अभ्यास करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है, जैसे भूखे को भोजन मिल जाता है तो वह खुश हो जाता है वैसे ही ज्ञान के इच्छुक व्यक्ति को ज्ञान मिल जाए तो वह भाव विभोर हो जाता है।

यदि व्यक्ति का चित्त शुद्ध तथा पवित्र होता है तभी उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है। मनुष्य की सबसे मूल्यवान संपत्ति उसका ज्ञान है। विभिन्न तत्व दर्शन करने के पश्चात् मनुष्य ज्ञान अर्जित करता है।

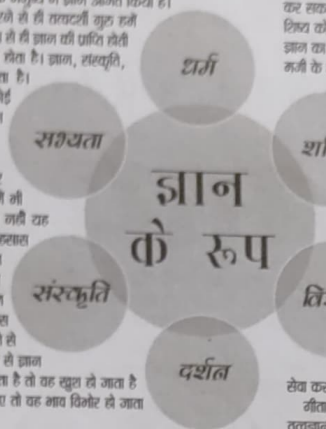

गुरु बिन ज्ञान नहीं

सेवा, जिज्ञासा, प्रणिपातेन से ही मनुष्य तत्वज्ञानियों से ज्ञान प्राप्त कर पाता है। ज्ञानी यह देखता है कि जो प्रश्न कर रहा है वह उसका पात्र है कि नहीं। अपनी पात्रता को विकसित कर हम ज्ञान का अर्जन कर सकते हैं। गुरु ज्ञान को संप्रेषित करने में सक्षम है। ज्ञान पाने और ज्ञान देने की प्रक्रिया में कभी शिष्य को गुरु खोजना पड़ता है तो कभी गुरु को शिष्य। यदि गुरु और शिष्य का समन्वय हो जाए तो ज्ञान का संप्रेषण सही ढंग से हो पाता है। जैसे सूफी सन्त जलालुद्दीन रूमी और उनके गुरु मुखी-तेल-मजी के मध्य हुआ।

सूफी से पहले रूमी विद्वान मौलवी थे उनके उपदेशों में संवेदनाएँ नहीं थी क्योंकि उनको अपने ज्ञान पर अहंकार था। गुरु से मिलने के बाद उनका प्रतिष्ठा से उत्पन्न विकृत अहंकार नष्ट हो गया और उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई। हमारे जीवन में प्रकाश डालने का कार्य जो तत्व करता है वो ज्ञान कहलाता है। ज्ञान के बराबर इस धरती पर पवित्र कुछ भी नहीं है।

अगर गुरु आपकी जिज्ञासा, सेवा तथा प्रणाम से खुश होते हैं, तो वें ज्ञान देते हैं ज्ञान हमें जीवन जीने की कला सिखाता है तथा विचारों को लाने में सामर्थ्यवान बनाता है। स्फटिक के जैसे चित्त की शुद्धि, चित्त की स्वच्छता तथा चित्त के प्रकाश को ही ज्ञान कहते हैं। प्रतिष्ठा से अहंकार उत्पन्न है जो प्रतिष्ठा अहंकार देती है वही विकृति देती है। गुरु सदैव शिष्य की परीक्षा लेता है। वह शिष्य के ज्ञान को परखता है। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात् गुरु शिष्य को ज्ञान देता है।

गुरु सेवा की विधि

निष्काम भाव से गुरु की आध्यात्मिक सेवा करें, बच्चों की तरह जिज्ञासु बनकर गुरु से प्रश्न करें और अपने अहंकार को गुरु के समक्ष झुका दें अर्थात् अपने गुरु को दण्डवत् प्रणाम करें, यही मार्ग आपको तत्वज्ञान की ओर अग्रसर करेगा। गुरुओं की सेवा करने का मतलब उनके विचारों को अपने जीवन में उतारकर दूसरों तक पहुँचाना है।

गीता में भगवान जिस ज्ञान की बात कर रहे हैं उसे पाना मुश्किल है लेकिन असंभव नहीं। वह सिर्फ तत्वज्ञानी ही दे सकता है क्योंकि ज्ञान बुद्धि नहीं विवेक है। ज्ञान स्मृति नहीं अनुभव है, ज्ञान विचारों का स्रोत नहीं चित्त की शुद्धि है। पुस्तकें ज्ञान तो देती हैं किन्तु अनुभव तो हमें स्वयं एकत्र करना होता है।

दुर्गम पथ से पार ले जाती है माँ दुर्गा

मां दुर्गा अपने प्रथम स्वरूप में शैलपुत्री के नाम से जानी जाती हैं। पर्वतराज हिमालय की पुत्री होने के कारण इनका नाम शैलपुत्री पड़ा। माता शैलपुत्री अपने पूर्व जन्म में सती के नाम से प्रजापति दक्ष के यहां उत्पन्न हुई थीं और भगवान शंकर से उनका विवाह हुआ था। शैलपुत्री, पर्वत रुपी जड़ता को भेदकर निकली हुई चेतना है। शैलपुत्री वृषभ पर सवार हैं। इनके दाएं हाथ में कमल पुष्प सुशोभित है। पार्वती एवं हेमवती भी इन्हीं के नाम हैं। मां शैलपुत्री दुर्गा का महत्व एवं शक्तियां अनन्त हैं। नवरात्र पर्व पर प्रथम दिवस इनका पूजन होता है। इस दिन साधक अपने मन को 'मूलाधार' चक्र मे स्थित करके साधना प्रारम्भ करते हैं। इससे मन निश्छल होता है और काम-क्रोध आदि शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

नव रूप में माँ शक्ति का आगमन होता है। माँ शैलपुत्री हिम पर्वत से निकली हुई देवी हैं। हिमालय की पुत्री होने से शैलपुत्री देवी प्रकृति स्वरूपा हैं। इस मां को अखंड सौभाग्य का प्रतीक भी माना जाता है। हमारे जीवन की प्राथमिकताओं में दृढ़ता, स्थिरता और आधार का विशेष महत्व है। इसलिए इस दिन हमें अपने स्थायित्व के लिए माता शैलपुत्री से प्रार्थना करनी चाहिए, क्योंकि इनकी आराधना करने से जीवन में स्थिरता आती है। स्त्रियों के लिए इनकी पूजा करना श्रेष्ठ और मंगलकारी है। मां की कृपा से आपके घर में दुःख-दारिद्रता, कलह और निर्धनता का प्रवेश कभी नहीं होता है।

ज्ञान की महिमा

आनंद की प्राप्ति ज्ञान,
ईश्वर की अभिव्यक्ति ज्ञान,
नहीं ज्ञान है- बुद्धि,
विवेक की अनुभूति है ज्ञान,
केवल स्त्रोत नहीं,
विचारों की शुद्धि है ज्ञान,स्मृति नहीं,
अनुभवों की प्राप्ति है ज्ञान।
ज्ञान की प्राप्ति होगी कहाँ से-
ज्ञान की सृष्टि रचेगी...
कहाँ से गुरु की सेवा...
शिष्य की जिज्ञासा...
सेवा-सम्मान की भावना है ज्ञान।
मोह से निकल रे बंदे,
ज्ञान सागर में डुबकी लगा।
अशांति को त्याग,
शांति के पथ पर कदम बढ़ा।
न कोई शब्द हो,
न विचार हो,
न तर्क हो-न वितर्क हो,
बस सत्य का ही मार्ग हो।
ज्ञान पुस्तकें नहीं,
अस्तित्व की पहचान हैं।
ज्ञान को पहचान बंदे,
ज्ञान आत्म-ध्यान है।।

श्लोक

तद्विद्धि प्रणिपातेन
परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं
ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः
।। 4/34।।

उस ज्ञान को तू तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भली भांति दण्डवत् प्रणाम करने से इनकी सेवा करने और कपट छोड़कर सरलता पूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्व को भलीभांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्व ज्ञान का उपदेश करेंगे।

स्टोरी विद इम्पेक्ट

पर्शिया के महान सूफी संत जलालुद्दीन रूमी मौलवी थे। प्रतिष्ठा के पद पे आने के कारण उनमें अहंकार की विकृति आ गई थी। सूफी संत को अपनी पुस्तकों से बहुत प्रेम था। वे अपनी पुस्तकों को किसी को छूने भी नहीं देते थे। एक दिन मौलवी की सभा में एक फ़कीर आया, जिसका नाम मुखी-तेल-मजी था।

उन्होंने सूफी संत से पूछा कि क्या मैं आपकी पुस्तकें देख सकता हूँ ? उन्होंने मना कर दिया लेकिन उस बूढ़े फकीर की उम्र देखकर सोचा कि ये मेरी किताबों का क्या करेगा और अनुमति दे दी। फ़कीर ने उसकी किताबों को पानी में गिरा दिया। उसने परेशान होकर कहा कि तुमने मेरी सारी किताबों को पानी में गिराकर खराब कर दिया। फ़कीर ने उसकी परेशानी को देखकर किताबों को पानी से निकाला जिसे देखकर रूमी आश्चर्यचकित हो गए क्योंकि एक भी किताब भीगी नहीं थी।

उसे लगा कि वह कोई जादूगर है। इससे प्रभावित होकर रूमी ने फ़कीर से कहा कि आप मुझे अपना शागिर्द बना लिजिए। किन्तु फ़कीर ने उनकी बात को नकारते हुए वहाँ से चले गये।

फिर एक दिन वही फ़कीर जंगल में मिले। उन्होंने रूमी को शागिर्द बनाने के लिए हामी भर दी, लेकिन उसके लिए एक शर्त रखी कि तुम मुझे शराब की बोतल लेकर दो। वे अपनी प्रतिष्ठा और अहंकार के कारण शराब की बोतल लाने में अपमानित महसूस कर रहे थे। अंत में उन्होंने निश्चित किया कि अगर उन्हें गुरु को पाना है तो अपने अहंकार का त्याग करना पड़ेगा।

इसलिए उन्होंने गुरु को शराब की बोतल लाकर दे दी। शराब की बोतल को बाहर उड़ेलते हुए फ़कीर ने कहा कि मेरा लक्ष्य तुम्हारे अहंकार को मिटाना था। आज से तुम मेरे सच्चे शिष्य हो।

कहानी की प्रेरणा - अहंकार के नष्ट होने पर विकृति के नाश से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

दूसरा दिन

तप की शक्ति का प्रतीक मां ब्रह्मचारिणी

ब्रह्मं चारयितुम शीलं यस्यां सा ब्रह्मचारिणी,
अर्थात् जो ब्रह्म-ज्ञान देकर मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करे, वे ही मां ब्रह्मचारिणी हैं। देवी ब्रह्मचारिणी तप की शक्ति का प्रतीक हैं। माँ का द्वितीय स्वरूप भक्तों और सिद्धों को अनन्त फल देने वाला कहा गया है। इनकी कृपा से सिद्धि और विजय की प्राप्ति होती है। साथ ही मनोवांछित कार्य पूर्ण होते हैं। ब्रह्मचारिणी देवी का स्वरूप अत्यंत भव्य है। अन्य देवियों कि तुलना में वह अति सौम्य, क्रोधरहित और तुरंत वरदान देने वाली देवी हैं। ब्रह्मचारिणी देवी भक्तों को यह संदेश देती है कि जीवन में बिना तपस्या यानि कठोर परिश्रम के सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती है। माँ मूल रूप से तपस्विनी है। भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए इन्होंने हजारो वर्ष तक घोर तपस्या की और जंगल के फलों-पत्तों को खाकर अपनी साधना पूर्ण की और शिव को प्राप्त किया। इसलिए उनका स्वरूप बहुत सादा और भव्य है। देवी के एक हाथ में कमंडल है और दूसरे हाथ में चंदन माला है। प्रसन्न मुद्रा में यह माता अपने भक्तों को आशीर्वाद दे रही है। यह मां पूर्ण उत्साह से भरी हुई हैं। इनकी आराधना से घर में सौम्य लक्ष्मी का वास होता है। इनकी आराधना से दरिद्रता दरवाजे से वापस चली जाती है। विद्यार्थियों के लिए इनकी आराधना करना अति लाभप्रद होता है। उन्हें किसी भी तरह की शिक्षा, प्रतियोगिता में सफलता और गृहस्थों के लिए सदैव सुख-शान्ति बनी रहती है। साधक इस दिन अपने मन को मां के श्रीचरणों में एकाग्रचित करके स्वाधिष्ठान चक्र में स्थित करते हैं और मां की कृपा प्राप्त करते हैं। मां की उपासना से हमारे अंदर सहनशीलता, तप, त्याग, सदाचार एवं संयम की वृद्धि होती है।

श्लोक

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहि मेवं यास्यसि पाण्डव।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ।। 4/35।।

भावार्थ- जिसको जानकर फिर तू इस प्रकार मोह को नहीं प्राप्त होगा तथा हे अर्जुन! जिस ज्ञान के द्वारा तू संपूर्ण भूतों को निःशेष भाव से पहले अपने में और पीछे मुझ सच्चिदानंदघन परमात्मा में देखेगा।

सत्य की अनुभूति है ज्ञान

श्रद्धेय कुलाधिपतिजी ने शारदीय नवरात्र के दूसरे दिन, गीता के चौथे अध्याय के ३५वें श्लोक का अर्थ समझाते हुए ज्ञान से मनोनाश की प्रक्रिया का वर्णन किया।

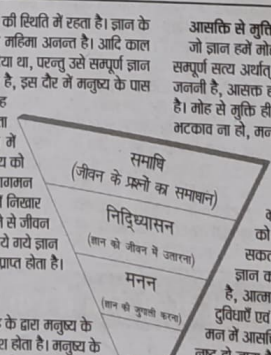

वास्तविक ज्ञान का आभास न होने से मनुष्य भ्रम की स्थिति में रहता है। ज्ञान के कारण ही मनुष्य दुसरे जीव-जन्तुओं से श्रेष्ठ है। ज्ञान की महिमा अनन्त है। आदि काल से ही मनुष्य ने जानकारियों को एकत्र करना शुरू कर दिया था, परन्तु उसे सम्पूर्ण ज्ञान का अनुभव वेदों से प्राप्त हुआ। आज विशेषीकरण का दौर है, इस दौर में मनुष्य के पास जानकारी का स्त्रोत तो है परन्तु वास्तविक ज्ञान नहीं है। वह खंडित ज्ञान तो अर्जित कर रहा है लेकिन ज्ञान की सम्पूर्णता के अस्तित्व को नहीं जान पा रहा है। गुरु के सानिध्य में मनुष्य की मोह माया भंग हो जाती है। गुरु के बिना मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। जिस प्रकार से सूर्य के आगमन से सृष्टि में प्रकाश उत्पन हो जाता है, प्रकृति के सौन्दर्य में निखार आ जाता है, उसी प्रकार से जीवन में गुरु का प्रवेश हो जाने से जीवन में उपस्थित अंधकार दूर हो जाता है। गुरु के द्वारा प्रदान किये गये ज्ञान से जीवन को व्यवस्थित तथा सुन्दर करने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

मोह एक आसक्ति

मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा बन्धन मोह होता है। मोह के द्वारा मनुष्य के जीवन में कभी सुख, कभी दुख, घृणा, ईर्ष्या आदि का प्रवेश होता है। मनुष्य के जीवन में मोह के साथ ही आसक्ति का आगमन होता है। यदि मनुष्य अपने और पराए के माया-मोह के बन्धन में फँसा रहेगा, तो उसे मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती है। मनुष्य में ज्ञान की लौ जल जाए तो मोह के सारे बन्धन छूट जाएं। आसक्तियाँ मनुष्य जीवन को बांधे हुए अनेक खूटियाँ हैं, जो मनुष्य को मोक्ष के मार्ग में आगे नहीं बढने देती। जब मनुष्य का मोह नष्ट होता है, तो ज्ञान का आरम्भ हो जाता है। मनुष्य को आसक्ति के बढ़ने से पहले 'मेरेपन' के भाव से निकल जाना चाहिए।

मोह सकल व्याधिन कर मूला, तेही तें उपजे बहुबिधि शूला ।।

आसक्ति से मुक्ति

जो ज्ञान हमें मोह से मुक्त करता है वही यथार्थ ज्ञान है। वेदांत दर्शन में सम्पूर्ण ज्ञान, सम्पूर्ण सत्य अर्थात् ब्रह्म को ही कहा गया है। ब्रह्म ही परम सत्य है। मोह आसक्ति की जननी है, आसक्त होकर हम सम्पूर्णता पर ध्यान नहीं देते। मोह हमें पूर्णरूपेण बाँध लेता है। मोह से मुक्ति ही ज्ञान की प्राप्ति है। गीता में भगवान कहते हैं- जहाँ भ्रांतियाँ, दायरे, भटकाव ना हो, मन विराट हो जाए और सम्पूर्ण प्राणियों में परमात्मा की अनुभूति हो तब अखंड एवं अनन्त ज्ञान की प्राप्ति होती है।

ज्ञान के आने से आसक्ति चली जाती है

खंडित ज्ञान कभी वास्तविक नहीं होता है, अंश ज्ञान से संशय, भ्रांति, तर्क-वितर्क और भटकाव उत्पन्न होता है। अंश को जानने से पूर्ण को नहीं जाना जा सकता, परन्तु पूर्ण को जानने से अंश को जाना जा सकता है। पूर्ण और वास्तविक ज्ञान संदेहरहित, अनन्त होता है। सम्पूर्ण ज्ञान को आत्मसात कर लेने वाला मन, भ्रान्तियों एवं मोह से मुक्त हो जाता है, आत्मा परमात्मा में विलिन हो जाती है। मन मिट जाता है अर्थात मन की दुविधाएँ एवं चिन्ताएँ मिट जाती है, चित्त शुद्धि हो जाती है। आंशिक ज्ञान मनुष्य के मन में आसक्ति व परेशानियों को उत्पन्न करता है। परेशान व्यक्ति के जीवन में संगीत नष्ट हो जाता है, केवल दिमागी शोरगुल बच जाता है और आसक्त मनुष्य का जीवन एक खूंटी की तरह है जिस पर वह प्रशंसा नामक कपड़े टांगे रहता है। ज्ञान के आने से चिन्ता समाप्त हो जाती है, भक्ति के आने से भय, आसक्ति चली जाती है।

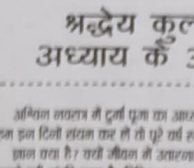

संवेदना से ज्ञान की अनुभूति

यदि मनुष्य में संवेदना का जागरण हो जाता है तो मनुष्य में ज्ञान का प्रस्फुरण प्रारम्भ हो जाता है। ज्ञान को प्राप्त करने का अनुपान संवेदना है। संवेदना में एक ऐसी शक्ति होती है जो किसी भी मनुष्य में ज्ञान की जिज्ञासा को जन्म देती है तथा जब तक उस मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक वो शान्ति से नहीं रह पाता है।

गीता में कहा गया है कि जो सुख और दुःख में एक समान रहते है, वही परम योगी है।

स्टोरी विद इम्पेक्ट

प्रसिद्ध विद्वान एल्डस हैक्सले को अपनी पुस्तकों से बड़ा प्रेम था। उनका अपना समृद्ध पुस्तकालय हुआ करता था, जिसमें विभिन्न विषयों पर अनेक पुस्तकें होती थी। वे जब भी अपने घर से कहीं जाते तो उन्हें अपने पुस्तकालय की चिंता सताने लगती और पुस्तकों के मोहवश, वे घर से दूर ज्यादा देर तक नहीं रह पाते। एक बार जब वे घर से बाहर थे तो उनकी बिल्ली से जलती हुई मोमबत्ती पुस्तकों के ढेर पर गिर गई और देखते ही देखते सारी किताबें धू-धू कर जलने लगी। जब ये खबर उन्हें मिली तो वे भागते हुए घर पहुंचे और अपनी पसंदीदा [illegible] को जलते देखकर हतप्रभ रह गए। कुछ देर बाद वे अचानक ही जोर-जोर से हंसने लगे। [illegible] देखकर आसपास के लोग आश्चर्यचकित हुए और बोले, आपको तो अपनी किताबों से [illegible] मोह है तो फिर भी उनके जलने पर आप हंस रहे हैं? [illegible] आसक्ति से मैं हमेशा चिंतित रहता था। आज इस आग के [illegible] में मोह मुक्त हो गया हूं। **कहानी की प्रेरणा**- हमें ऐसा ज्ञान चाहिए जो हमें मोह से दूर ले [illegible]

ज्ञान से होगी पाप मुक्ति

श्रद्धेय कुलाधिपतिजी ने शारदीय नवरात्र के तीसरे दिन, गीता के चौथे अध्याय के ३६वें श्लोक को समझाते हुए ज्ञान से पाप मुक्ति का वर्णन किया।

आज कलयुग में ईर्ष्या तथा महत्वकांक्षाओं ने मनुष्य को पापी बना दिया है, पाप में डूबकर मनुष्य अपने जीवन का उद्देश्य भी भूल चुका है। ज्ञानी भी अज्ञानी बनकर जीवन के स्वरूप को नहीं पहचान पाता। जीवन एक नाव की तरह है जिसके दो पतवार है-पाप तथा पुण्य, मनुष्य मोह से ग्रसित होकर पाप करता है। परिणामस्वरूप उसकी कस्ती भवर में फंस जाती है, और वह जीवन रूपी सागर के पार नहीं जा पाता है। कोई पापी यह नहीं मानता है कि मैं पाप कर रहा हूँ। यह उसके चित्त की भ्रान्तियां होती है, इन्हे दूर करने का माध्यम है सद्ज्ञान क्योंकि अज्ञानवश जो कर्म हो जाता है वही पाप है। अज्ञान मनुष्य को पाप की ओर अग्रसर करता है। जब मोह ज्ञान को ग्रसित कर लेता है तो मनुष्य अपने जीवन की दिशा को भूल जाता है और पाप कर बैठता है।

कृष्ण रूपी प्रकाश है गुरू

गुरू मनुष्य को पाप रूपी अन्धकार से कृष्णरूपी प्रकाश की ओर ले जाता है। गुरू हमें ज्ञान के चक्षु देता है, पाप कर्म से पुण्य कर्म की ओर ले जाता है। गुरू का मतलब ही है शिष्य जीवन में ज्ञान को उड़ेलने वाला। पवित्रता के सागर में जो स्नान करा दे वही गुरू है। भगवान की सबसे बडी पूजा उसके बारे में पूर्णरूपेण जान लेना है। ईश्वर बड़े से बड़े पापियों को क्षमा कर देता है।

चित्तशुद्धि

चित्त की अवस्था के जैसी ही जीवन की अवस्था होती है। मनुष्य के चित्त का स्वरूप जिस प्रकार का होता है, उसी प्रकार का उसका जीवन होता चला जाता है यदि चित्त प्रकाशमय हो जाए तो मनुष्य उर्ध्वगामी हो जाता है। चित्त में प्रकाश का आगमन सकारात्मकता तथा शुभ एवं पुण्य कर्मों के परिणामस्वरूप होता है। चित्त में अँधियारे का प्रवेश पाप कार्यों की वजह से होता है।

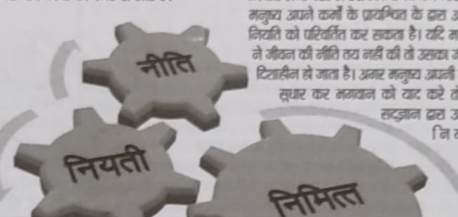

हमारा चित्त ही चित्रगुप्त होता है

जब मनुष्य कोई कार्य करता है तो कोई उसे देखे या ना देखे किंतु उसके चित्त पर अमुक कार्य की छाप पड़ जाती है। मनुष्य अपने मन में जैसा बीज बोता है वही उसके चित्त में पोषित होने लगता है। मनुष्य की कई भ्रांतियां है जो उसे भटकाती है परंतु कोई कितना भी बड़ा पापी हो ज्ञानरूपी नौका में बैठकर सम्पूर्ण पाप समुद्र पार कर जायेगा।

नीति, नियति तथा निमित्त

जीवन की नीति जैसी होती है, मनुष्य की नियति भी वैसी ही बनती है, अर्थात् मनुष्य की जीवन-नीति ही उसके जीवन की नियति का निर्धारण करती है।

यदि मनुष्य की नीति अच्छी होगी तो स्वभावतः नियति भी अच्छी हो जाएगी तथा जैसी नियति होगी वैसी ही उसकी निमित्त बन जाएगी। मनुष्य अपने कर्मों के प्रायश्चित के द्वारा अपनी नियति को परिवर्तित कर सकता है। यदि मनुष्य ने जीवन की नीति तय नहीं की तो उसका जीवन दिशाहीन हो जाता है। अगर मनुष्य अपनी नीति सुधार कर भगवान को याद करे तो वह सद्ज्ञान द्वारा उसकी नियति और निमित्त सुधर जाएंगे।

अज्ञानता ही पाप है और पुण्य ज्ञान

सभी प्रकार के जीवन का स्वरूप मनुष्य के ज्ञान पर निर्भर करता है। पाप अज्ञान है और पुण्य ज्ञान है। अज्ञानता का परिणाम ही एक प्रकार का पाप होता है। ज्ञान वह है, जो मोह के ज्ञान को नष्ट कर देता है। मनुष्य अज्ञान के अंधेरे में सही दिशा। भटक जाता है तो वह पाप कहलाता है। उचित-अनुचित में भेद ना कर पाना पाप होता है। अपने भ्रांति तथा भ्रमित विचारों से दूर होने का एक मात्र उपाय ज्ञान है। चित्त में संकलित अशुभ कर्म मनुष्य को पापी बनाते हैं। यदि मनुष्य अपने पापों को मान ले, सत्कर्म और सद्ज्ञान से वह अपने चित्त को प्रकाशमय कर सकता है। जैसे हजार वर्षों के अन्धेरे को एक छोटा सा दिया भी दूर कर देता है।

महत्वाकांक्षाएं छूटेंगी तभी होगी पापमुक्ति

चित्त को विचारों के, कर्मों के, तथा आचरण के द्वारा अशुद्ध करना पाप है। महत्वाकांक्षाएं मनुष्य के जीवन को पतन की ओर अग्रसर करती है। इसलिए जब तक मनुष्य की महत्वाकांक्षाएं नहीं छूटेंगी तब तक मनुष्य पापों से दूर नहीं हो सकता है। जब मनुष्य स्वार्थ की ओर बढ़ता है, मर्यादाएं तोड़ता है तथा स्वार्थ के कारण दूसरों को हानि पहुँचाता है तो अपने जीवन में पाप का बीजारोपड़ करता जाता है।

ज्ञान का आचरण

ज्ञान की सही तथा सटीक परिभाषा आचरण होती है। मनुष्य के आचरण से उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। आचरण के द्वारा ही व्यक्ति श्रेष्ठ बनता है। भगवान श्रीकृष्ण कहते है- ज्ञान वह है जो आचरण में आत्मसात हो जाए। जहाँ ज्ञानरूपी प्रकाश होगा वहाँ पापरूपी अंधकार का नाश हो जाएगा। मनुष्य के जीवन में ज्ञान के प्रवेश से प्रकाश का समावेश होगा। गुरू के सानिध्य में जाओ क्योंकि गुरू हमें ज्ञानरूपी चक्षु प्रदान करता है।

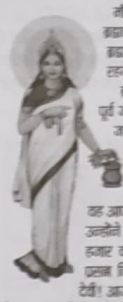

तप का आचरण करने वाली मां ब्रह्मचारिणी

माँ दुर्गा की नवशक्तियों का दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी है। ब्रह्म शब्द का अर्थ तपस्या है। ब्रह्मचारिणी अर्थात तप का आचरण करने वाली।

ब्रह्मचारिणी देवी का स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय है। पूर्व जन्म में जब ये हिमालय के घर पुत्री रूप में जन्मी थीं। नारद जी ने उन्हे किशोरावस्था में यह बताया कि अगर आपको अपनी वास्तविकता जाननी है तो आपको कठोर तप कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न करना होगा। वह आपको आपकी वास्तविकता का ज्ञान कराएंगे। उन्होंने नारद जी के निर्देश को मानते हुए एक हजार वर्ष तक कठोर तपस्या कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न किया। तब ब्रह्माजी ने उनसे कहा कि 'हे देवी! आज तक किसी ने इतनी कठोर तपस्या नहीं की, भगवान शिव तुम्हे पति के रूप में प्राप्त होंगे।' इसी तपस्या के कारण इन्हें तपश्चारिणी अर्थात ब्रह्मचारिणी नाम से अभिहित किया गया। नवरात्र के दूसरे दिन इन्हीं के स्वरूप की उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन स्वाधिष्ठान चक्र में स्थित होता है। इस चक्र में अवस्थित मन वाला योगी उनकी कृपा व भक्ति प्राप्त करता है।

ज्ञान की महिमा ३-४

पाप की कालिख मिटा,
उजियारे का दीप जला।
पवित्रता के सागर में नहा,
ज्ञान को अपना गुरू बना।
न विधि है, न कोई विधान है,
तेरा आचरण ही तेरा ज्ञान है।
ईश्वर है तेरे अंदर,
खुद को वे विश्वास दिला।
पाप की कालिख मिटा,
उजियारे का दीप जला।
मोह को त्याग, सत्य को अपना।
जब बाधक बनें जमाना,
तो ज्ञान को ब्रह्मास्त्र बना।

ज्ञान की अग्नि में,
कर्म भस्मीभूत कर,
कर्म बंधन तोड़,
आत्म-तत्व मुक्त कर।
अज्ञान चक्र से निकल,
ज्ञानास्त्र प्रयोग कर,
शुभकर्म वर्तमान कर,
कर्मपाश समाधान कर।
राग, द्वेष मुक्त हो,
सतत् पुण्य कर्म कर,
ज्ञान दीप को जला,
आत्म पथ प्रशस्त कर।

श्लोक

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृ.ामः।
सर्व ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि ।।4/36।।

यदि तु अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है, तो भी तू ज्ञानरुप नौका द्वारा निःसन्देह सम्पूर्ण पाप-समुद्र से भली-भाँति तर जायेगा।

स्टोरी विद इम्पेक्ट

एक व्यक्ति था, जो हमेशा लोगों को उपदेश देता था। एक दिन उसके पड़ोसी के बेटे की मृत्यु हो गई, उसके घर के समस्त सदस्य दुःखी होकर विलाप करने लगे। वह व्यक्ति जब वहां पहुचा तो दिलासा देने के बजाय, उपदेश देने लगा, 'तुम सभी दुःखी .यों हो, जीवन मरण का क्रम तो चलता रहता है, आत्मा अमर है, मोह को त्यागो, मृत्यु परम सत्य है।' इसी प्रकार वह सभी को समझाने लगा, सभी शान्त हो उसे ज्ञानी समझकर उसकी बातें सुनने लगे। इसके दूसरे ही दिन वह व्यक्ति अपने घर के बाहर फूट-फूट कर रो रहा था, लोगों ने हैरान होकर रोने का कारण पूछा कि 'हे ज्ञानी पुरूष!, आप इतने ज्ञानी होते हुए भी .यों रो रहे हैं?' व्यक्ति ने उ.र दिया, 'आज हमारी हमप्यारी बकरी का देहांत हो गया है, जो हमें दूध देती थी, जिससे हम चाय बनाकर पीते थे'। लोग यह देखकर समझ गए कि ज्ञान बिना आचरण में आत्मसात किए व्यर्थ है।

कहानी से प्रेरणा- ज्ञान आचरण में उतरे तो सार्थक है और वही वास्तविक ज्ञानी है।

चतुर्थ दिन -

परम शांति और कल्याण करने वाली मां चन्द्रघंटा

मां दुर्गा के तीसरे रूप का नाम चन्द्रघंटा है। मां चन्द्रघंटा, शक्ति माता का शिवदूती स्वरूप है, जिसे कल्याणकारी रूप माना गया है। नवरात्रि-उपासना में तीसरे दिन इन्हीं के विग्रह का पूजन किया जाता है। इनका यह स्वरूप परम शांतिदायक और कल्याणकारी है। इनकेमस्तक में घंटे के आकार का अर्धचन्द्र होने के कारण इन्हे चन्द्रघंटा देवी कहा जाता है। मां चन्द्रघंटा की मुद्रा सदैव युद्ध के लिए अभिमुख रहने से भक्तों के कष्ट का निवारण शीघ्र कर देती हैं। इनका वाहन सिंह है, अतः इनका उपासक सिंह की तरह पराक्रमी और निर्भय हो जाता है। इनके घंटे की ध्वनि सदा अपने भक्तों की प्रेत-बाधादि से रक्षा करती है। मां चन्द्रघण्टा के साधक और उपासक जहां भी जाते हैं, लोग उन्हें देखकर शांति और सुख का अनुभव करते हैं। नवरात्र के तीसरे दिन साधक का मन मणिपुर चक्र में प्रविष्ट होता है। इनकी आराधना हमेशा फलदायी होती है। मां चन्द्रघंटा की आराधना से प्राप्त होने वाला एक सद्गुण यह भी है कि साधक में वीरता-निर्भरता के साथ ही सौम्यता एवं विनम्रता का विकास होता है। स्वर में दिव्य, अलौकिक, माधुर्य का समावेश हो जाता है। इस देवी की उपासना से भक्तों को भौतिक, आत्मिक, आध्यात्मिक सुख और शांति भी मिलती है। घर-परिवार से नकारात्मक ऊर्जा यानी कलह और अशांति दूर होती है।

श्लोक

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरूतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरूते तथा ।।4/37।।

क्योंकि हे अजुर्न! जैसे प्रज्वलित अग्नि ईंधनों को भस्ममय कर देता है, वैसे ही ज्ञानरूप अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्ममय कर देता है।

स्टोरी विद इम्पेक्ट

एक सन्यासी हिमालय में तप करते थे। एक दिन बहुत से विदेशी पर्यटक हिमालय घूमने आये । सन्यासी ने उनसे पूछा कि आप कहाँ से आये हैं? पर्यटकों ने अपने देश के बारे में बताया कि हमारा देश सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य तथा वैभव से भरा हुआ है। पर्यटकों की बातें सुनकर, सन्यासी ने सोचा कि दुनिया में देखने के लिए इतना कुछ है, और मैं सिर्फ हिमालय में ही रह गया। वे अपने अंत समय में भ्रमण के बारे में सोचते रहे और उनका देहान्त हो गया। कुछ वर्षों बाद, अमेरिका के एक समृद्ध परिवार में एक बालक का जन्म हुआ, जो बचपन से ही ईश्वर की प्रार्थना में लीन रहता था। जिसे देखकर उसके परिवार वालों ने हैरान होकर उससे पूछा कि तुम पूजा में क्यों लीन रहते हो? बच्चे ने बताया कि उसे अमेरिका घूमना है। तब उसके परिवार वालों ने उसे पूरा अमेरिका घुमाया। जब उसने 8 वर्ष की उम्र में पूरा अमेरिका घूम लिया, तब वह जोर-जोर से हँसकर बोला कि यही वो अमेरिका है जिसको घूमने के लिए पूरी दुनिया तरसी जा रही है। तब उन्हें अपने पुनर्जन्म का आभास हुआ कि वह एक सन्यासी था और अपने अंत समय में राह से भटक गया था। इसी भटकन ने प्रारब्ध का रूप ले लिया और उन्हें फिर से जन्म लेना पड़ा।

कहानी की प्रेरणा- कर्म के प्रारब्ध से मुक्ति के लिए निष्काम कर्म की आवश्यकता है।

ज्ञान रूपी अग्नि में भस्म हो सकल दूषित कर्म

श्रद्धेय कुलाधिपतिजी ने शारदीय नवरात्र के चौथे दिन, गीता के चौथे अध्याय का ३७ वें श्लोक को समझाते हुए ज्ञान से मनोनाश का वर्णन किया।

आज के दौर में मनुष्य परिस्थिति का दास बन चुका है। अज्ञान, राग-द्वेष, अस्मिता, अभिनिवेश, अहंकार रूपी जीवन के पंचक्लेश मनुष्य को बाँधे रखते हैं। साथ ही परिस्थितीयाँ भी हमें कर्मों की जटिलता के साथ बाँधे रखती है। असल में दोष न परिस्थिति का है और न मनःस्थिति का, यह सब कर्म का परिणाम है। एक छोटी सी चिन्गारी पूरे वन में आग लगा देती है, आग बड़ी जल्दी दहकने लगती है, चाहे वह वासना की हो या कामना की। कामना, वासना और आसक्ति अज्ञानवश जो क्रिया करवाती है वही कर्म है। कर्म सबसे बड़ा बन्धन है। ज्ञानाग्नि की जागृति से कर्म के सभी स्वरूप नष्ट हो जाते है।

कर्म बन्धन

जब मनुष्य में मेरा और तेरा की भावना आ जाती है तो कर्म बन्धन प्रारम्भ हो जाता है। तब मनुष्य को राग द्वेष जकड़ लेते हैं और तब उसमें अभिनिवेश (मृत्यु का डर) की भावना का जन्म होता है। जो यादें उसे रुलाती तथा तड़पाती है, उसको कर्मपाश (जकड़न) कहते हैं। यदि मनुष्य में पुण्य, तप तथा सकारात्मक ऊर्जा की भावना जग जाए तो उसे ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। मनुष्य की इच्छा केवल उसे प्रेरित करती है। प्रकृति मनुष्य की इच्छा को पूर्ण नहीं करती अपितु कर्म के आधार पर परिणाम देती है।

बाबा तुलसी के अनुसार-

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करे, सो तस फल चाखा।।

कर्म का जन्म कहाँ होता है?

कर्म का जन्म अज्ञानता से होता है। कर्म प्रकृति का विधान है तथा जो हम करते हैं वह क्रिया है, और जब क्रिया से संकल्प, भावना, संवेदनाएँ जुड़ जाती है तब कर्म बनता है। क्रिया का परिणाम तत्कालिक होता है, परन्तु कर्म का परिणाम दीर्घकालिक होता है। कर्म फल की इच्छा आसक्ति तथा भ्रांति का एक ऐसा बीज है जो बड़े होकर घृणा, द्वेष, राग और विकृति रूपी वृक्ष बन जाता है, इस वृक्ष की जड़ें जीव-आत्मा को गति नहीं मिलने देती है। कर्म के भंवर से निकालने का काम ज्ञान करता है।

कर्म के प्रारब्ध से मुक्ति

कर्म के प्रारब्ध से मुक्ति सम्भव है। रूचि, मोह, घृणा, द्वेष, राग, ईर्ष्या ही मनःस्थिति को प्रभावित करती है। यदि मनुष्य के अन्दर ज्ञान प्रतिष्ठित हो जाए तो उसे अच्छे तथा बुरे कर्म का भान हो जाता है। कर्म की डोर से कर्म की कड़ियाँ जोड़ी जाती है। ज्ञान को आपत्तियाँ तथा विपत्तियाँ कभी बांध नहीं पाती है। ज्ञानी को प्रारब्ध भोगना नहीं पड़ता किन्तु अज्ञानी को भोगना पड़ता है। यदि ज्ञान आचरण में उतर जाता है, तो वह चिरकाल तक मनःस्थिति में टिका रहता है। मनुष्य में पुण्य, तप तथा सकारात्मक ऊर्जा की भावना जग जाए तो उसे ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। सुख ज्ञानी को बांध सकने में सक्षम नहीं होता तथा दुःख ज्ञानी को विचलित नहीं कर सकता।

कर्म से मुक्ति

मनुष्य में तीन प्रकार की अग्नि पाई जाती है- जठराग्नि, प्राणाग्नि तथा ज्ञानाग्नि। जिसमें ज्ञानाग्नि के जाग्रत होने के पश्चात् कर्म के सभी स्वरूप, कर्मबीज नष्ट हो जाते हैं। ज्ञान सभी प्रकार के संस्कार बीजों का नाश कर देता है। ज्ञान मनुष्य को कर्म तथा कर्म के परिणाम से पूर्णतः नष्ट कर देता है। ज्ञान हमें सभी प्रकार की परिस्थितियों में सही प्रतिक्रिया तथा सामंजस्य करना सिखाता है।

जिस प्रकार से अग्नि बहुत तेजी से बढ़ती है और ईंधनों को भस्म करने की क्षमता रखती है, ठीक उसी प्रकार से ज्ञान रूपी अग्नि मनुष्य के सम्पूर्ण कर्मों को नष्ट कर देने में सक्षम होती है। ज्ञानी का मन चंचल नहीं होता है और न ही किसी परिस्थिति में विचलित होता है।

ज्ञानी की आत्मा में नाद का अनुभव उसे जन्म-जन्मान्तर के कर्मों से मुक्त कर देती है। जो आत्मा में रूक जाये, वर्तमान में रूक जाये वही ज्ञानी है। अज्ञानी तो अतीत के कर्मों में विचरित करता है। कोई भी मनुष्य कभी भी दुखी को प्राप्त नहीं होता अपितु वह जन्म के बन्धन में तब तक भटकता रहता है, जब तक वह अपने शुभ कर्म और ज्ञान से अपने प्रारब्ध को समाप्त नहीं कर देता है। कर्मों से मुक्त होकर उसकी आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है।

The liberating fire of Knowledge

its Origin, Way & the Ultimate Destination

Day- 01 Seeker at the feet of Master

Understand the true nature of that Knowledge by approaching seers of Truth. If you prostrate at their feet, render them service, and question them with an open and guileless heart, those wise seers of Truth will instruct you in that Knowledge.(4/34, Geeta)

Knowledge is the greatest wealth that man has. Nothing is as pious as knowledge; it is even pure than the holy Ganges. Knowledge is not just about the accumulation of thoughts, it is about experience; thoughts only provides us the mental realization whereas our experiences provides us freedom. Knowledge demands practice; knowledge doesn't comes from merely reading books but from practicing. Just like a hungry man gets satisfaction when he finds a piece of bread in the same way a learner gets elated when he finds knowledge. There is no knowledge without a master. The master delivers knowledge to his disciples. And in this process of delivering and gaining knowledge either the disciple has to search his Master or the master searches his disciple. We can acquire knowledge from even the greatest Masters by developing in us the eligibility, sincerity, noble inquisitiveness and selfless service. The element that enlightens our soul is Knowledge. The purity of our soul, its clarity & the illuminating light of our soul is knowledge. Be inquisitive like a child, serve your master selflessly and surrender your ego before him. This will lead you to the path of wisdom. The best way to serve your Master is to inculcate their teachings in your life and disseminate it to others. Knowledge is not mind but the discriminatory wisdom, knowledge is not memory, it is an experience, it is not just a source of thoughts rather the purification of soul. Books gives us knowledge but we have to gain the experiences our self.

Day- 02 Seeing God in Self, Self in all

Arjuna, when you have achieved enlightenment, ignorance will delude you no more. In the light of that knowledge, you will see the entire creation first within your own Self, and then in Me (the Oversoul). (4/35, Geeta)

Knowledge is the realization of truth. The absence of true knowledge leads a person into doubt. Knowledge is what differentiates human beings from animals. The glory of knowledge is seamless. Today man has endless source of knowledge but is lacking in understanding the value of true knowledge. Just like the rising sun drives out the darkness and enhances the natural beauty in the same way the presence of mentor/Master drives out the darkness of ignorance from one's life. The knowledge provided by the Master guides us towards a systematic and beautiful way of life. Attachment is the greatest fetter for man. Attachment leads to sorrow, jealously and suffering. Attachment leads to addiction. If the flame of knowledge is ignited inside our soul we can free our self from all the fetters of attachment. Freedom from attachment is attainment of knowledge. The knowledge that frees us from the fetters of attachment is true knowledge. According to Vedas Brahm is regarded as the ultimate truth.Geeta says where distractions, boundaries and doubts doesn't exist and when you feel the presence of God in every being that is when seamless knowledge is gained. Fragmented knowledge is never true, divided knowledge gives way to doubt, misconceptions, and misleads and creates intimidation's & disturbances. A disturbed soul loses all the soulful music from his life and all that is left is the chaotic noise of a disturbed mind, and our life becomes like a hanger where we hang clothes depicting happiness. With the coming of knowledge all the worries disappear just like fear disappears in the presence of faith. Sympathy is the medium to gain knowledge. Sympathy has that power that can arouse the curiosity for knowledge in any being and until he doesn't gains knowledge he can't be at peace. According to Geeta the one who is not affected either by pleasure or grief is Yogi in true sense.

Day- 03 Way across the sins

Even if you were the most sinful of all sinners, this Knowledge alone would carry you, like a raft, across all your sins. (4/36, Geeta)

Today in this materialistic world, human being have become sinners with jealously and mundane desires surrounding them. In this caldron of sin even the intellectuals are wandering on the path of ignorance forgetting their actual motto. This life is like a boat with two tillers of sin and good deeds, man gets trapped in the fetters of attachment and commit sins because of which his boat sinks and he is unable to sail through the sea of life. No sinner ever accepts that he has committed any sin and this is the misconception of his soul, which can be only corrected with the help of knowledge, because sin is any act done under the influence of ignorance.

When attachments and addiction overpower knowledge, man is misled and he commits sin. Master guides his disciple from the darkness of sin towards the light of wisdom(Lord Krishna). He preaches us the discriminatory wisdom and bathes us in the ocean of knowledge. The greatest worship of God is to know him completely. Our lifestyle is the mirror of our soul. An illuminated soul leads to constructive lifestyle. A soul dipped in the darkness of ignorance leads to sinful acts. There are many misconceptions of man that misleads him but even the most wretched sinner can sail through the sea of sin in the boat of knowledge. Our ethics decides our destiny and destiny decides the intend (nimmit) of our goals. By the penance of his deeds a man can change his intended goals(nimmit). All forms of human life depends on his knowledge. Sin is ignorance and good deeds reflect the presence of knowledge. The lack of discriminatory wisdom is sin. The accumulation of bad deeds in the soul makes a man sinner. Just like a lamp can drive out the darkness of a million years, If a sinful person accepts his sin his soul will be enlightened. Polluting the soul with evil thoughts, evil actions and evil acts is sin. Without shedding one's mundane desires one can't get rid of sins, because desires lead us towards breaking limits and makes us selfish which is not any less than sowing the seeds of sin. The appropriate definition of knowledge is behavior. A man's behavior shapes his personality. Lord Krishna says: knowledge is what has been imbibed in one's behavior. Where ever there is thy light of knowledge the darkness of ignorance vanishes. Knowledge illuminates the life of man. Surrender yourself to your Master for only he can provide you the enlightening vision.

Day- 04 The blazing fire of the Knowledge

For, as the blazing fire reduces the fuel to ashes, Arjuna, even so the fire of Knowledge turns all actions to ashes. (4/37, Geeta)

Today man has become the slave of circumstances. Ignorance, jealously, aggression have surrounded us from all sides. Circumstances bind us with the complexity of our deeds. But its neither the fault of circumstances nor the fault of our mindsets; it is all the results of our deeds. Just like a little spark turns into flame and can destroy the entire forest, in the same way the fire of our lust, desire and attachment whatever act it forces us to perform in the darkness of ignorance is our (karma) deeds. The karma binds us intensely. With the flame of knowledge all forms of deeds can be destroyed. As the ignited fire always rises upwards so only the flame of gyan should be ignited in one's soul. From the time a person starts to develop the feeling of 'MY' and 'YOUR' the strings of karma starts tightening, thus binding him. Only man's will can inspire him to learn, nature gives results on the basis of our deeds. Deeds are born out of ignorance. What we do is our actions, and when our emotions, determination and desires are added to our actions, it becomes our deeds. The results of our actions are instant whereas the results of our deeds are long lasting and leaves an imprint on our soul.Just like the fire has the capacity to burn the fuel to ashes, in the same way knowledge has the capacity to burn our deeds to ashes. Knowledge has the capacity to maintain balance between all our actions and deeds. The one who knows how to be stable in the present, how to be stable and in harmony with his soul is the true Gyaani. None can reach salvation until and unless he has not freed himself from the fetters of his deeds with the help of knowledge. Once he is free from all the fetters, his soul meets and confluences with the soul of the almighty. Knowledge is the moulder of true disciple.

Day- 05 Knowledge - The greatest purifier

In this world there is no purifier as great as Knowledge; he who has attained purity of heart through prolonged practice of Karmayoga, automatically sees the light of Truth in the selfin course of time. (4/38, Geeta)

The orthodox mindset has bought man to such a crossroad, that is only leading him towards ignorance. Man today doesn't has the guts to accept his mistakes and that is greatest barrier for him in attaining purity of the soul. Even our small mistakes binds us which ignites worries in our soul. Worries are equal to pyre, worries destroy the values of human which further weakens our internal energy thus affecting the stability and piousness of our soul. Knowledge provides us piousness and destroys our inhibitions and impurities. Nothing is as pious as knowledge. Knowledge is not just about words but the thoughts. It doesn't just comes from reading books and neither it has anything to do with caste, religion and gender. It is related with the piousness of the inner soul. A clean, empathetic and happy soul is the sign of piousness. Piousness has nothing to do with touch, it is entirely related to the inner purity. Cleanliness of body is important but even more important than that is the purity and cleanliness of our soul by getting rid of all the negativity. Piousness has nothing to do with a persons caste it is the values, thoughts and the deeds of a person that decides his level of purity. Until the soul is not illuminated, the physical body can't be illuminated. A man is what he thinks and does. Whatever acts we repeat on our daily basis that is how we become, our addictions and attachments pollute our deeds. Purification of soul is only possible through continuous "sadhana". A pure soul becomes the powerhouse of knowledge. Knowledge is born out of the purity of the soul. Wherever there is love, faith and devotion, there exists piousness. The piousness and purity is also affected by our surrounding. Being in the company of saints and sages can also lead us to the purity of our soul. Knowledge is infectious which heals the darkness of ignorance. The purity of the soul is the sign of true enlightenment. True knowledge begins with selflessness. The soul that is free from all the sins and deeds is in the purest form.

Day- 06 Sustained faith leads to knowledge

He who has mastered his senses, is exclusively devoted to his practice and is full of faith, attains Knowledge; having had the revelation of Truth, he immediately attains supreme peace in the form of God-realization. (4/39, Geeta)

Although man may have made science his slave, but he is still a slave to his senses. Just like the direction of the boat sailing in the sea is decided by the wind in the same way adorable faith controls our senses. Our senses are very distracted, and that is the reason we very easily get lured by fragrances, tastes, touch...distracted senses doesn't allow us to experience knowledge because knowledge can be gained only through adorable faith and not through emotions.

Adorable faith makes a man stable and determined, the meaning of adorable faith lies much in depth of just emotions, it is a situation where one is in a position to feel the touch of the Almighty. A person with adorable faith can only acquire knowledge in true sense. Faith is the boundless love to ideal, it is the basis of knowledge and ultimate peace. Faith has the capacity to purify our emotions and give us the ability to survive and surpass the adversities. By making the right use of our senses one can become pure and stable. The person with adorable faith, pure soul, is the one who has been illuminated with the light of knowledge. With the presence of true knowledge man reaches the height of consciousness.

Day- 07 Spiritual path not for the doubting souls

He who lacks discrimination, is devoid of faith, and is at the same time possessed by doubt, is lost to the spiritual path. For the doubting soul there is neither this world nor the world beyond, nor even happiness. (4/40, Geeta)

Life is the chain of events between our birth and death. Our life depends on our choices. whatever we decide and choose with our discriminatory wisdom, it leads the direction of our life. If one has faith one chooses the path of construction and if one is in doubt he chooses the path of destruction. All our results depends on our one decision, the path we choose. In the absence of faith and discriminatory wisdom, even the greatest knowledge gets destroyed. Our doubts destroy our discriminatory wisdom and gives birth to ignorance. A doubtful & faithless man with lack of discriminatory wisdom is deprived of knowledge as well as happiness. Faith is the greatest source of positive energy and our wisdom is the path to attain knowledge. Doubt is born out in the absence of discriminatory wisdom. It is the cause of destruction and it also destroys faith. Even the goddess Sati had to be burned to ashes because in her doubt she considered lord Rama to be a mortal. This human body is made up of the five elements of nature, and presence of consciousness brings bliss into our life. Without consciousness man's existence is lost. The awakening of consciousness and bliss in human being is done by spiritual knowledge. Knowledge, vision, thoughts and understanding they all come with the presence of discriminatory wisdom. Just like words with melody form a soothing music, in the same way discriminatory wisdom provides us with a vision of reality. Faith is necessary towards the goal, whereas dedication should be towards the path and the discriminatory wisdom provides us with continuous pace to achieve our goal. Nothing is entirely in pure state, just like every coin has two phases, in the same way every thing has a good and a bad side. It is up to us that at which side we look at. Doubt leads us on the path of destruction. The day our doubts are destroyed that day our discriminatory wisdom will take charge and we will progress. We need to sail on the boat of faith and wisdom to become Narayan (the supreme Soul) from Nar(ordinary soul).We need to destroy the web of attachments, addiction, illusions and doubts.

Day- 08 Selfless action leads to Knowledge

Arjuna, actions do not bind him who has dedicated all his actions to God according to the spirit of Karmayoga, whose doubts have been dispelled by wisdom and who is self-possessed. (4/41, Geeta)

After the clouds of ignorance have swept away, an enlightening sun of knowledge takes over. Our mind is the cause of our freedom and fetters. Our life is full of illusions. Karmas are the biggest illusions of our life and one needs to get rid of these fetters through karmayoga. Our deeds provides us experiences and these experiences have two consequences: they are emotions and our thoughts(intelligence). Emotions provide us the understanding of the world, relations and life and thoughts enable us to express our understanding of the world. Today Yoga has been left just to asansa but actually yoga is a process; a process of evolution and elevation of human soul.

Yoga is not just presentation rather is a secret and sacred philoshphy; it is the confluence of one's soul with the almighty by following the path of yam, niyam asana, pranayam and pratyahar; thus leading him to a state of dharna, dhyaan and samadhi. Yoga helps in destroying the chains of our deeds thus purifying our soul. Human life is unimaginable without deeds. A Yogi should be curious because only one who is curious, determined and courageous can climb Himalayas.

Where the fetters of deeds are destroyed that is where yoga is born. We need to turn our deeds into Yoga. The result of Yoga is knowledge. "A gyaani offers the flowers of his karma in the feet of the Almighty". Knowledge destroys all the elements that effect our discriminatory wisdom. One who is involved in good deeds has a pure mind & soul and always remains blissful. When our emotional nodes are destroyed, when we have nothing left inside us no bliss, no grief, that is when our soul meets the Almighty. The process of Removing the barriers between you and the Almighty is Yoga. It is selflessly separating the ego from your soul. Yoga and knowledge come together to enlighten human in true sense.

Day- 09 Slash to pieces the doubts of heart with sword of knowledge

Therefore, Arjuna slashing to pieces, with the sword of knowledge, this doubt in your heart, born of ignorance, establish yourself in Karmayoga in the shape of even-mindedness, and stand up for the fight. (4/42, Geeta)

When one reaches the zenith of knowledge and wisdom, all his nodes melt away. A man has different types of doubts in his heart. When feelings are bound by doubts, it is difficult to express them. The feelings of life has two parts - emotions and thoughts. Illusions and doubts should never overpower our emotions and thoughts. The pollution of soul gives rise to illusion and doubts. We need to slash these illusion with the sword of knowledge. Our renunciation should not ignite ego in us. Only after the kingdom of ego is destroyed the enlightened soul rises with its kingdom of knowledge and wisdom. Spirituality is about inculcating the knowledge in our behavior. Self-realization is the best way to melt the nodes of materialism into consciousness. The one who doesn't gets effected by the situation is Gyaani and the one who is affected by the situation is mundane. Ignorance is the cause of all the frustration, depression, pain and bad habits. Our life goes through four phases the one when our soul and our body both is in awakened state (jagrat stage). The other when our body is asleep and our mind is in dreams (swapna stage). The third stage is when our mind and body both are under the influence of sleep(susupti stage). In the last stage both the human mind and body feel at utmost peace(turiya stage). It is necessary for us to rise to the level of renunciation and establish peace in our inner soul. The most important stage to acquire knowledge is by offering all your deeds in the feet of the Almighty and let the light of knowledge illuminate our soul. For knowledge is the most priceless treasure man can ever have.

पवित्रता का सर्वोच्च शिखर है - चित्त शुद्धि

श्रद्धेय कुलाधिपतिजी ने शारदीय नवरात्र के पाचवें दिन, गीता के चौथे अध्याय का ३८ वें श्लोक को समझाते हुए ज्ञान से पवित्रता का वर्णन किया।

त्रुटिपूर्ण विचारों से मनुष्य को मिला पद उसे लालच तक लाता है वह उसे अज्ञानता की ओर ले जाता है। अपनी गलतियों को स्वीकारने का साहस मनुष्य में नहीं होता है, तभी वह पवित्रता के शिखर तक पहुँच नहीं पाता। छोटी-छोटी गलतियाँ मनुष्य को बांध लेती हैं जिससे चित्त में चिन्ता का आगमन होता है। चिन्ता चिता समान है, वह मनुष्य के सारे संस्कारों का नाश करती है। मन के प्रवाह में जब विकार होता है तो जीवनी शक्ति का ह्रास हो जाता है, जैसे बहती हुई नदी के भंवर में आने से अच्छा तैराक भी डूब जाता है। उसी प्रकार जीवन शक्ति के क्षय होने से चित्त की पवित्रता और निर्मलता का नाश होता है। इस संसार में ज्ञान से ज्यादा पवित्र और कुछ भी नहीं है। ज्ञान से पवित्रता मिलती है, जिससे अज्ञानता, गलतियाँ, अशुद्धियाँ और अपवित्रता नष्ट होती है।

ज्ञान से पवित्रता

मनुष्य में ज्ञान के आगमन मात्र से वह पवित्र हो जाता है। जब तक वह अज्ञानी है प्रकाश की किरण उस तक नहीं पहुँच पाती, उसके अन्दर अपवित्रता बनी रहती है। जब मनुष्य को होश आता है तब उसे गलतियां और अशुद्धियाँ नजर आती हैं, ज्ञान को शब्दों और विचारों से तौला जाता है जबकि वास्तविक ज्ञान पवित्रता के माध्यम से आता है।

ज्ञानी व्यक्ति ही ब्रह्मस्वरूप

ज्ञान को शब्दों से तौला जाता है तथा उसकी परख विचारों से की जाती है। किताबें पढ़ने से ज्ञान नहीं आता, अगर ऐसा होता तो कुलपति कबीर ज्ञानी न होते और दर्शनकार रैदास संत न होते। ज्ञान का सम्बन्ध जाति, तर्क-वितर्क से नहीं अन्तःकरण की पवित्रता से है। ज्ञान तभी आता है जब हमारा अन्तःकरण निर्मल होता है। ज्ञानी व्यक्ति ही ब्रह्मस्वरूप है, मन में दूषित, कलुषित विचार भावनाओं को रखने वाले दीन होते हैं।

मन की स्वच्छता, सौम्यता, प्रसन्नता ही पवित्रता है। केवल स्नान कर लेने से कोई सर्वगुण पवित्र नहीं हो सकता है। पवित्रता देह की नहीं होती, देह की तो स्वच्छता होती है। योग की उच्चतम सिद्धि ही पवित्रता है। स्वच्छता मात्र एक गुण है जो मनुष्य को विकृत नहीं होने देता।

स्वच्छता, पवित्रता का अंग मात्र

स्वच्छता एक ऐसा गुण है जो मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रखर बनाता है। शरीर की पवित्रता केवल मनुष्य को निरोगी बनाए रखने के लिए है। पवित्रता देह तक सीमित नहीं होती, पवित्रता तो अंतःकरण की होती है। मन में दूषित, कलुषित भावनाएं न रहें तो अंतःकरण पवित्र रहता है। ज्ञान का महत्व स्वच्छता के दृष्टिकोण से है परन्तु मन की स्वच्छता से जीवनी शक्ति बनी रहती है।

पवित्रता का आधार

पवित्रता जाति आधारित नहीं होती, पवित्रता का आधार है मनुष्य के गुण, कर्म तथा स्वभाव। जातियों का पवित्रता के साथ कोई संबंध नहीं है ये समाज की केवल रूढ़ीगत परंपरा है। पवित्रता के लिए कई भ्रांतियां हैं मनुष्य शरीर की स्वच्छता को ही पवित्रता समझता है, परंतु वास्तव में पवित्रता मन की स्वच्छता से है।

मन एक कल्प वृक्ष

ज्ञान शरीर की पवित्रता से नहीं मन की पवित्रता से आता है। मन का अधिवास मिलता है तभी तन का अधिवास मिलता है। मन की पवित्रता विचारों को शान्त करने के लिए है। मन एक कल्प वृक्ष है, इसमें हम अपने अनुसार बीज तथा खाद डालते हैं और हम जैसा बोते हैं वैसा ही काटते हैं। जिस काम या वृत्ति को हम बार-बार दोहराते हैं वैसे ही बनते जाते हैं। हमारी आसक्तियाँ हमारे कर्म को प्रदूषित करती हैं। आसक्ति तथा अहंकार बोते हैं तथा भटकाव पैदा करते हैं। चित्त की शुद्धि निरन्तरता से की गई साधना से आती है। शुद्धचित्त ज्ञान का स्रोत बन जाता है। अन्तःकरण की शुद्धि से ज्ञान का उदय होता है। जहाँ प्रेम, भक्ति, श्रद्धा है वहीं पवित्रता है। मनुष्य चित्त के शिखर पर आई पवित्रता को देख पाता है।

मन में अंधियारा

अंधकार यदि मन में है तो तन को प्रकाशित करने से कैसे मिटेगा। अपराध सिर्फ किया नहीं होता बल्कि उसके पहले आने वाली भावनाओं, विचारों की अपवित्रता होती है। समाज में अपराध बढ़ने का कारण है कि व्यक्ति में अपने अपराध को समाज के सामने स्वीकारने का साहस नहीं होता। यदि व्यक्ति समाज के समक्ष अपना अपराध स्वीकार कर ले तो वह उस अपराध-भाव से मुक्त हो जाता है तथा उसके चित्त में चेतना का आगमन होता है।

ऊर्जा का भण्डार है मन

मन ऊर्जा का भण्डार है, इसमें ऊर्जा का सतत् प्रवाह होता रहता है। ऊर्जा के प्रवाह में यदि भंवर पड़ जाए तो मनुष्य इसमें फंस जाता है। यह भंवर काम, क्रोध, चिंता, अवसाद के रूप में होता है। चिंता को चिता के समान माना गया है यह हमारे भीतर नकारात्मकता को बढ़ा देती है। हमें सदैव अपने मन में सकारात्मक विचार लाने चाहिए क्योंकि हम जैसा विचार करते हैं वैसा ही हमारे साथ घटित होने लगता है।

मन की पवित्रता के लिए सत्संग

सत्संग का अर्थ है अच्छे लोगों का सानिध्य। सत्संग करने से आसक्ति मिटती है। ज्ञानी लोगों का संसर्ग मिल जाने से संपूर्ण पाप धुल जाते हैं। जो ज्ञानी के समीप रहेगा वह पवित्र हो जाएगा। हमारा आस-पास का वातावरण भी पवित्रता पर प्रभाव डालता है। जिस गुण और वृत्ति को बार-बार दुहराते हैं हम वैसे ही बन जाते हैं। जब हमारे भीतर ज्ञान आ जाए तो 'निकृष्टता भी विशिष्टता बन' जाती है। जहां पवित्रता है वहां प्रेम, भक्ति और ज्ञान है।

पवित्रता का शिखर

पवित्रता का शिखर चित्त शुद्धि है। हमारा चित्त कर्म मुक्त, संस्कार मुक्त और बीज मुक्त हो तो चित्त पवित्र हो जाता है। आसक्तियां कर्म को प्रदूषित करती हैं। यदि निष्कामता होगी तो अनासक्ति होगी। आसक्ति मनुष्य को भटकाती और भ्रम पैदा करती है, आसक्ति का दबाव हमें गलत मार्ग की ओर ले जाता है। पापमुक्त और कर्ममुक्त चित्त ही पवित्रता का शिखर होता है। शुद्धचित्त ज्ञान का स्रोत है। जो ज्ञानी है उसका व्यक्तित्व पवित्र होगा और जिसका चित्त जितना पवित्र वह उतना ही ज्ञानी है।

श्लोक

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ।।4/38 ।।

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्धान्तःकरण हुआ मनुष्य अपने-आप ही आत्मा में पा लेता है।

स्टोरी विद इम्पेक्ट

एक बार स्वामी विवेकानंद दक्षिण भारत गए। घूमते हुए उन्होंने देखा कि, एक निम्न (पैरियार) जाति का व्यक्ति चिल्लाते हुए आ रहा है कि, सभी उच्च-कुलीन व्यक्ति हट जाएं, मैं आ रहा हूँ। स्वामी जी को यह देखकर आश्चर्य हुआ और उन्होंने एक व्यक्ति से पूछा कि यह व्यक्ति इस तरह से चिल्लाते हुए क्यों आ रहा है? और इसका मतलब क्या है? उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि यह व्यक्ति नीच-पैरियार जाति का है जो कि एक निम्न-जाति है और उच्च वर्ग के लोग यह मानते हैं कि अगर उन पर इस जाति के लोगों की परछाई भी पड़ जाए तो वह अपवित्र हो जायेंगे और पाप के भागी होंगे। यह सुनकर स्वामीजी को बहुत दुःख हुआ। तब उन्होंने एक सभा में लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि भविष्य में एक ऐसे महापुरूष आयेंगे जो समाज से ऊंच-नीच का भेद मिटा देंगे। स्वामीजी के इसी कथन को साकार किया युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने।

कहानी की प्रेरणा- मनुष्य जाति से पवित्र-अपवित्र नहीं होता, वरन् उसका गुण, कर्म, स्वभाव उसे उच्च या निम्न बनाता है।

आयु-यश में वृद्धि करने वाली मां कुष्मांडा

मां कुष्मांडा की उपासना से समस्त रोग-शोक दूर होकर आयु-यश में वृद्धि होती है। नवरात्र में देवी के इस रूप के दर्शन करने से घर-परिवार में सुख-शांति आती है। यदि कोई सच्चे हृदय से मां का शरणागत बन जाए, तो उसे सुगमता से परम पद की प्राप्ति हो सकती है।

अतः अपनी लौकिक, पारलौकिक उन्नति चाहने वालों को इनकी उपासना में सदैव तत्पर रहना चाहिए। माना जाता है जब सृष्टि का अस्तित्व भी नहीं था, तब इन्हीं देवी ने ब्रह्मांड की रचना की थी। अतः ये ही सृष्टि की आदि-स्वरूपा यानी आदिशक्ति हैं। इनका निवास सूर्यमंडल के भीतर के लोक में है। वहां निवास करने की क्षमता और शक्ति केवल इन्हीं में है। इनके शरीर की कांति और प्रभा मंडल भी सूर्य के समान ही दैदीप्यमान है। इनके तेज और प्रकाश से दसों दिशाएं प्रकाशित हो रही हैं। अनाहत चक्र जाग्रत होता है। ब्रह्मांड की सभी वस्तुओं और प्राणियों में अवस्थित तेज इन्हीं की छाया है। ये अष्टभुजा देवी के नाम से भी जानी जाती हैं। इनके हाथों में क्रमशः कमंडल, धनुष-बाण, कमल-पुष्प, अमृतपूर्ण कलश, चक्र तथा गदा है, जबकि आठवें हाथ में सभी सिद्धियों और निधियों को देने वाली जपमाला है। इनकी आराधना करने से जीवन के सारे दुख खत्म हो जाते हैं तथा आयु, यश, बल और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

ज्ञान की महिमा ५-

विमल भक्ति गहन दो,
ज्ञान यज्ञ शुभ तपन दो,
पवित्रता को सींप उर में,
दिव्य गुरू अपनी शरण दो।
क्लेश कोई न रहे मन में,
आत्मबल विकसित करो,
साधना पथ से न भटके,
ज्ञान की ऐसी तपन दो।
सद्भावनाएं जगे हृदय में,
ऐसी लौ प्रभु ज्ञान की दो,
चित्त हो निर्मल हमारा,
शुभ कर्म निष्काम दो।

भावों की गहनता में,
परम व्यापक ज्ञान,
तत्पर-संयतेन्द्रिय,
अटल अविचल ज्ञान।
श्रद्धा सिक्त मनोभूमि,
गहरा सघन ज्ञान,
आत्म की अनुभूति से,
वज्रवत समर्थ ज्ञान।
तपस अनुपम ज्योति से,
शुद्ध पावन विरल ज्ञान,
भावनाओं के शिखर पर,
निर्मल पवित्र सेव्य ज्ञान।

छठां दिन

मोक्ष प्रदान करने वाली मां स्कंदमाता

देवी स्कंदमाता का पूर्ण श्रद्धा भाव से किया गया पूजन मोक्ष प्रदान करने वाला माना गया है। मां भगवती की भक्ति और कृपा प्राप्ति के लिए- या देवी सर्वभूतेषु, मां स्कंदमाता रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

मंत्र का जप किया जाता है। कहा जाता है कि नवरात्र के पांचवें दिन जो भक्त देवी स्कंदमाता को विशुद्ध हृदय से पूजा अर्चना करके प्रसन्न करते हैं, उनके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। पारिवारिक कलह एवं अशांति से छुटकारा मिल जाता है। देवी स्कन्दमाता के पूजन से आरोग्य की प्राप्ति होती है। देवी भगवती का पांचवां स्वरूप नारी शक्ति और मातृ शक्ति का सजीव चरित्र है। मां की

परम्परा को अधिष्ठापित करने वाली माता भगवती का नाम स्कन्दमाता है। वह कार्तिकेय जी और गणेश जी की भी माता हैं। गणेश जी मानस पुत्र हैं और कार्तिकेय जी गर्भ से उत्पन्न हुए पुत्र। ताड़कासुर को वरदान था कि वह शंकर जी के शुक्र से उत्पन्न, पुत्र द्वारा ही मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। इसी कारण देवी पार्वती का शंकर जी से मंगल परिणय हुआ। इससे कार्तिकेय ने जन्म लिया और ताड़कासुर का वध किया। शंकर-पार्वती के मांगलिक मिलन को सनातन संस्कृति में विवाह परंपरा का प्रारंभ माना गया।

श्लोक

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।।4/ 39 ।।

जितेन्द्रिय, साधनपरायण और श्रद्धावान् मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह बिना विलम्ब के तत्काल ही भगवत्प्राप्तिरूप परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

स्टोरी विद इम्पेक्ट

आर्थर एश्लोन [illegible] के महान जजों में से एक माने जाते थे। एक बार उनके पास एक कत्ल का मुकदमा आया। मुकदमा शुरू होते ही अपराधी ने कहा कि मैंने कत्ल नहीं किया। अपराध सिद्ध हो जाने के बाद जज ने उसे फांसी की सजा सुना दी। सजा सिद्ध होने के बाद मुलजिम बहुत परेशान हो गया। [illegible] और उसने उनकी परेशानी का कारण जानना चाहा। उसने बताया कि मैं बेकसूर हूं, आप एक सिद्ध पुरूष हैं, आप ही बताइए कि क्या मैं गुनहगार हूं? क्या मैं कत्ल में शामिल हूं? तब योगी पुरूष ने अपनी दिव्यदृष्टि से देखा कि वह व्यक्ति उस समय कहां था? और उस व्यक्ति का कोई गुनाह नहीं है, वह मासूम है। [illegible] और कहा कत्ल उसने नहीं, किसी और ने किया है, वह कातिल नहीं है। जज ने पूछा कि क्या आपके पास इसका कोई प्रमाण है? हालांकि योगी के पास उसकी बेगुनाही का कोई प्रमाण नहीं था, तब भी उन्होंने पूरे विश्वास के साथ और अपनी सच्चाई के प्रमाण का [illegible] [illegible]

[illegible] आर्थर एश्लोन, योगी से बहुत प्रभावित हुए। [illegible] उन्होंने योगी से शिक्षा प्राप्त कर [illegible] आप मुझे अपना शिष्य बना लीजिये। योगी ने [illegible] [illegible] कि मैं आपको गुरू-दक्षिणा के रूप में क्या दे सकता हूं? तब योगी ने कहा कि मेरी गुरू-दक्षिणा यही होगी कि तुम भारतीय ज्ञान को विश्व में व्यापक कर दो। तब [illegible] भारतीय ग्रंथों का अनुवाद किया और भारतीय ज्ञान को विश्व में फैलाया।

कहानी की प्रेरणा- गुरू के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धावान व्यक्ति में तत्परता, संयम और जितेन्द्रियता [illegible] आत्मिक सिद्धि पा लेता है।

श्रद्धावान लभते ज्ञानम्

श्रद्धेय कुलाधिपतिजी ने शारदीय नवरात्र के छठवें दिन, गीता के चौथे अध्याय का ३९ वें श्लोक को समझाते हुए ज्ञान से मनोनाश का वर्णन किया।

भले ही मनुष्य ने विज्ञान को अपना दास बना लिया हो, परन्तु आज भी वह अपनी इन्द्रियों का दास है। जैसे जल में चलने वाली नाव की दिशा वायु निर्धारित करती है, वैसे ही श्रद्धा की दिशा इन्द्रियाँ निर्धारित करती हैं। इन्द्रियाँ बहुत चंचल हैं इसलिए सुगन्ध, स्वाद, रस, विषय और स्पर्श में मन शीघ्रता से लीन हो जाता है। विचलित इन्द्रियाँ ज्ञान का अनुभव नहीं होने देती क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति भावनाओं से नहीं श्रद्धा से होती है। श्रद्धा मनुष्य को दृढ़ और स्थिर बनाती है।

श्रद्धा का अर्थ भावुकता से कहीं ज्यादा गहरा है, श्रद्धा पर टिके रहने वाला चेतना के शिखर पर आरूढ़ होकर परमात्मा को स्पर्श कर पाने में सक्षम हो जाता है। श्रद्धावान व्यक्ति को ही वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति होती है।

आदर्शों से असीम प्यार है श्रद्धा

श्रद्धापरायण व्यक्ति वज्र के समान है जिसकी इन्द्रियाँ विकल और बेचैन नहीं बल्कि स्थिर और संयमित होती हैं। इन्द्रियों को स्थिर, संयम से किया जाता है और संयम तप से प्राप्त होता है। तप ने विश्वरथ को विश्वामित्र बना दिया। तप से काया की शुद्धि और इन्द्रियों की सिद्धि प्राप्त होती है, जैसे मीरा और रसखान की श्रद्धा-भक्ति ने उन्हें ज्ञान के शिखर पर पहुँचाया, तप से वे निर्विकल्प की अवस्था में आ गए। अब न तो कोई विकल्प शेष रहा न कोई विचार। श्रद्धा ने उन्हें ज्ञान का अनुभव करा दिया। आदर्शों से असीम प्यार ही श्रद्धा है। जब व्यक्ति भावनाओं के द्वारा दूसरों की संवेदनाओं, भावनाओं आदि को समझने लगता है, तब उसके अन्दर श्रद्धा की भावना का प्रस्फुरण प्रारम्भ हो जाता है।

भावनात्मक अस्थिरता से मुक्ति

मानवीय रूप में दो तरह की क्षमताएं होती हैं-भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक। मनुष्य में ज्ञान की क्षमता का आधार श्रद्धा है। श्रद्धावान का मन, व्यक्तित्व और भाव स्थिर होकर शुद्ध ज्ञान एवं परम शांति को प्राप्त करते हैं। भाव से हमें अनुभूति की प्राप्ति होती है। ज्ञान का सम्पर्क भाव क्षेत्र से है, न कि उथली भावुकता से। पल भर की भावनात्मक अस्थिरता से मुक्ति श्रद्धा के द्वारा ही संभव है। श्रद्धा मन की मलिनता को हटाकर मनुष्य के मन में शांति को जागृत करती है।

ज्ञान एक अनुभव - कार्य में स्वयं को पूर्णतः झोंक देना ही श्रद्धा का सच्चा अर्थ है।

श्रद्धा के द्वारा ही मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति होती है। मनुष्य का अनुभव जितना अधिक गहरा होगा उसका ज्ञान उतना ही गूढ़ तथा गहन होता जाएगा। श्रद्धा का सम्बन्ध मनुष्य की भावुकता से नहीं अपितु भावनाओं से होता है। क्योंकि भावुकता में भावनाओं की अस्थिरता होती है। मनुष्य के पल-पल का भावनात्मक परिवर्तन भावुक व्यक्ति में शोक, ईर्ष्या, लोभ जैसे व्यतिरेक को उद्वेलित करता है। जब व्यक्ति की श्रद्धा में भावनाएँ अत्यंत गहरी तथा अविचल हो जाए तो उसमें प्रतिकूलता के समय में भी ढल जाने का साहस आ जाता है।

तपस्या से तमस का नाश

यदि मनुष्य श्रद्धा में टिका रहे तो भावनाओं का शिखर इतना ऊँचा हो जाता है कि उसमें कोई व्यतिरेक नहीं रह जाता तथा जो भावनाओं के शिखर पर आरुढ़ हो जाए, वह ज्ञान के शिखर पर पहुंच जाता है।

मनुष्य में भावना का उदय श्रद्धा के माध्यम से होता है, श्रद्धा से व्यक्ति दृढ़, मजबूत तथा स्थिर हो जाता है। जब व्यक्ति कोई कार्य सोच-समझकर करता है, तो उसकी भावनाओं में श्रद्धा का समावेश हो जाता है।

श्रद्धा परायण व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को अविचलित बना लेता है, जिसके परिणाम स्वरुप लोभ, मोह, ईर्ष्या जैसे व्यतिरेक उसके व्यक्तित्व को प्रभावित नहीं कर पाते। तपस्या से मनुष्य में तमस का नाश सम्भव है। तपस्या एक माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य की समस्त इन्द्रियाँ शुद्ध एवं निर्मल बन जाती हैं। इन्द्रियों को हरना आसान होता है उसे तो एक मनोहारी दृश्य भी हर सकता है। जब द्रष्टा दृश्य में लीन हो जाता है, दृश्य द्रष्टा में लीन हो जाता है तो उसे मनोहारी (मन को हरने वाला) कहते हैं।

श्रद्धा के जागरण से समाधि

श्रद्धावान व्यक्ति का ज्ञान शुद्ध अन्तःकरण से होता है। जब व्यक्ति की भावनाएँ प्रगाढ़, मन शुद्ध तथा चित्त निर्मल हो जाता है, तो उसके जीवन में प्रकाश का प्रवेश हो जाता है। यदि मनुष्य इन्द्रियों पर नियंत्रण करके तप में लग जाता है तो वह समाधि के शिखर पर पहुँच जाता है।

संशय है विनाश द्वार, श्रद्धा-विवेक लगाए उस पार

श्रद्धेय कुलाधिपतिजी ने शारदीय नवरात्र के सातवें दिन, गीता के चौथे अध्याय का ४० वें श्लोक को समझाते हुए श्रध्दा–विवेक से संशयनाश का वर्णन किया।

जन्म और मृत्यु के बीच की कड़ी का नाम है जीवन। जीवन पूर्णतया हमारे चुनाव पर निर्भर करता है। मनुष्य अपने विवेक की कसौटी पर परख कर जिस विकल्प का चुनाव करता है, वही उसके जीवन की दिशा तय करता है। मन में श्रद्धा हो तो मनुष्य सृजन को चुनता है और मन में संशय होने से विनाश को चुनता है। हमारा सारा परिणाम सिर्फ एक निर्णय पर निर्भर करता है। विवेक और श्रद्धा के अभाव में बड़े से बड़ा ज्ञान भी नष्ट हो जाता है। संशय विवेक को नष्ट कर अज्ञानता को जन्म देता है। संशय युक्त, श्रद्धा रहित, विवेकहीन मनुष्य को न तो लोक मिल पाता है और न ही परलोक, न तो वह ज्ञान को प्राप्त कर पाता है न आनन्द को।

ज्ञान पाने का मार्ग विवेक

श्रद्धा ऊर्जा का परम स्त्रोत है और विवेक ज्ञान पाने का मार्ग है। विवेक न होने का परिणाम ही संशय है। संशय विनाश का पूरक है, संशय के आते ही श्रद्धा क्षीण हो जाती है। स्वयं माता सती को यज्ञ-अग्नि में भस्म होना पड़ा क्योंकि उन्होंने नारायण को संशय में नर मान लिया। मनुष्य का यह शरीर पंचमहाभूतों की जड़ता से है। इस प्रकृति में उल्लास तब आता है जब चेतना का अवतरण होता है। अगर शरीर में आत्मा, चैतन्यता न हो तो मनुष्य अपना अस्तित्व ही खो बैठे। प्रसन्नता और चेतना का जागरण मनुष्य की आत्मा में आध्यात्मिक ज्ञान से होता है। ज्ञान, दृष्टि, सोच व समझ की प्राप्ति विवेक से होती है। यह संसार जड़-चेतना के गुणों से भरा हुआ है। अवगुणों के साथ कई गुण भी छिपे रहते है, पर उसे पहचानने के लिए विवेक की आवश्यकता पड़ती है, जैसे अफीम में नशा होने के साथ-साथ उसमें औषधी के गुण भी पाये जाते है। विष मृत्यु का कारण बनता है परन्तु उसका विवेकपूर्ण उपयोग कई असाध्य रोगों को ठीक कर जीवन देता है। जड़-चेतन में गुण और दोष दोनों होते है। संसार के समस्त जीवों में गुण दोष है जिस प्रकार से हंस पानी दूध को अलग कर देता है वैसे ही संत पुरुष विवेक के माध्यम से सही गलत की पहचान करते है। श्रद्धा और विवेक ज्ञान के विकास की ओर ले जाते है और अज्ञानता तथा विवेकहीनता विनाश की ओर। जैसे ध्वनि लयबद्ध न हो तो शोर बन जाती है और लयबद्ध ध्वनि कर्णप्रिय संगीत बनती है।

असीम प्रेम है श्रद्धा

श्रद्धा को संशय तोड़ता है, अगर जीवन में प्रेम न हो तो सारी प्रेरणाएं मिट जाती है। संशय पल-पल की बेचैनी है जो विवेक को नष्ट करती है। सारे मनोरोग संशय से ही उभरते है। संशय पथिक को गन्तव्य से अनभिज्ञ रखता है। श्रद्धा असीम प्रेम है, मनुष्य जीवन में शान्ति का परम स्त्रोत है। श्रद्धा हमारे शरीर को एकाग्रता प्रदान करती है। श्रद्धा मनुष्य को गन्तव्य बोध कराती है और निष्ठा उसे मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है। श्रद्धा लक्ष्य के प्रति होती है तथा निष्ठा मार्ग के प्रति। श्रद्धावान बिना थके बिना रूके चलते रहते हैं। श्रद्धावान, निष्ठावान को अपना लक्ष्य स्पष्ट होता है और विवेक मनुष्य को गन्तव्य के लिए निरन्तर गति प्रदान करता है। अपने उद्देश्य पर टिकने वाले तथा विवेक जाग्रत रखने वाले ही सफल हो पाते हैं।

पराक्रम, साहस तथा निर्भयता का उपयोग

संशय के द्वारा मनुष्य का ही नुकसान होता है। संशययुक्त, विवेकहीन, श्रद्धारहित मनुष्य परमार्थ पथ से भ्रष्ट हो जाता है, जिससे उन्हें लोक, परलोक एवं सुख की प्राप्ति नहीं होती है। अज्ञानता और विवेक की कमी का परिणाम संशय होता है।

यदि मनुष्य गलत कार्यों की अपेक्षा अच्छे कार्यों में अपने पराक्रम, साहस तथा निर्भयता का उपयोग करें तो सफलता के शिखर पर पहुंचा जा सकता है। संसार में कोई भी वस्तु दोषहीन नहीं है, संसार में प्रत्येक व्यक्ति के अंदर गुण और दोष दोनों पाए जाते हैं। लेकिन इन दोनों का अतिवाद व्यक्ति के लिए बुरा है। गुण के अधिक होने पर व्यक्ति के भीतर अभिमान, अहंकार की उत्पत्ति होने लगती है और दोष के अधिक होने पर मनुष्य दुर्गति की ओर अग्रसर होना प्रारंभ कर देता है।

अति सर्वत्र वर्जते-

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप ।।

जहां भी कोई कार्य आवश्यकता से अधिक होता है, वहां नुकसान उठाना पड़ता है।

विवेक व श्रद्धा ही जीवन लक्ष्य का पाथेय

विवेक का ज्ञान हमारे जीवन की दिशा तय करता है। यदि मनुष्य में विवेक होगा तो उसका जीवन लक्ष्य स्पष्ट होगा और यदि विवेक के स्थान पर संशय का प्रवेश होता है, तो मनुष्य के विनाश का मार्ग प्रशस्त होता है। जीवन के लक्ष्यों के प्राप्त करने हेतु श्रद्धा व निष्ठा आवश्यक है। श्रद्धा अगर लक्ष्य है, तो निष्ठा उस लक्ष्य को पाने का मार्ग है। अगर लक्ष्य स्पष्ट नहीं है तो व्यक्ति दिशाहीन होकर दौड़ता है। व्यक्ति की कुशलता तब प्रकट होती है जब लक्ष्य का निर्धारण हो चुका होता है। विवेक व श्रद्धा ही लक्ष्य का मार्ग है, श्रद्धा के द्वारा मनुष्य को स्थिरता मिलती है। मनुष्य के भीतर समस्त मनोरोग संशय के द्वारा उत्पन्न होते हैं। जीवन में प्रेम न हो तो समस्त प्रेरणाएं नष्ट हो जाती हैं, श्रद्धा को ही सबसे असीम प्रेम माना गया है। विधि के विपरीत चलने वाले मनुष्य का जीवन हमेशा संशययुक्त होता है और वह विवेकयुक्त निर्णय नहीं ले पाता है। जहां संशय होता है वहां डर और भ्रम पैदा होते हैं, और गंतव्य-मंतव्य सब समाप्त हो जाता है। इसी संशय के कारण मनुष्य अपने विनाश की ओर जाने लगता है। हमारे जीवन की मूलभूत सम्पति श्रद्धा है। आध्यात्मिक सफलता के लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है श्रद्धा व विवेक। ज्ञान का मार्ग विवेक से है, भक्ति का मार्ग श्रद्धा से है। संशय विनाश की डगर पर ले जाता है जिस दिन संशय नष्ट हो जाएगा उस दिन विवेक की प्राप्ति हो जाएगी।

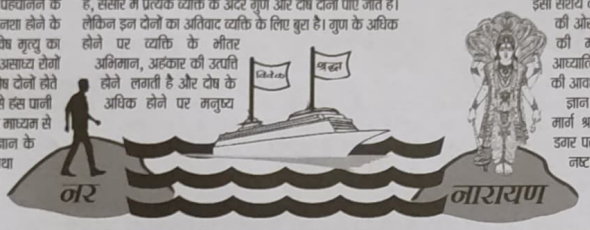

रजस का नाश करने वाली मां कात्यायनी।

माता भगवती का छठा अवतार है कात्यायनी। इनकी भक्ति से मनुष्य को अर्थ, धर्म, कर्म, मोक्ष आदि की प्राप्ति हो जाती है। सभी तरह के भय से मुक्ति पाने के लिए माता कात्यायनी का पूजन किया जाता है। अच्छा जीवन साथी पाने के लिए अविवाहित युवक-युवतियाँ इनकी आराधना करें। साधक का मन आज्ञा चक्र में स्थित रहता है। इनका वर्ण स्वर्ण के समान चमकीला है, इनकी चार भुजाएं हैं। इनके दो हाथों में तलवार एवं कमल पुष्प सुशोभित है, जबकि दो हाथ वर और अभय मुद्रा में अपने भक्तों को आशीर्वाद देते हैं। इनका वाहन सिंह है। व्यक्ति का रोग, शोक, संताप, भय आदि सभी नष्ट हो जाते हैं।

मान्यता है कि महर्षि कात्यायन ने मां भगवती को अपनी पुत्री के रूप में प्राप्त करने की अभिलाषा के साथ वन में कठोर तपस्या की थी। महर्षि की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवती ने उन्हें पुत्री का वरदान दिया। तत्पश्चात् महिषासुर नामक एक राक्षस के अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए त्रिदेवों के तेज से एक कन्या का जन्म हुआ, जिसने अपनी असीम शक्ति और तेज के बल पर महिषासुर का अंत कर दिया। कत्य गोत्र में जन्म लेने के कारण ही देवी भगवती कात्यायनी कहलाई।

ज्ञान की महिमा ७–८

न हो गर आत्मा,
तो शरीर का अस्तित्व क्या।
श्रद्धा–विवेक युक्त न,
तो ज्ञान का महत्व क्या।
संशय समूल नष्ट हो,
हो ऐसा भाव जागरण।
विवेक से चयन करें,
लक्ष्य का पथ, संचलन।
रज नाश कात्यायनी से हो,
स्वरूप नर का नारायण बने।
आदर्श प्रेम (श्रद्धा), विचार से,
साधक आत्म जागरण कर।
चेतना के सप्तम द्वार,
अविद्या पर अन्तिम प्रहार,
सद्जिज्ञासा, विवेक–योग से
छिन्न–भिन्न संशय, संसार।
प्रदर्शन से दर्शन को बढ़कर,
कर्म योग को मार्ग बनाएँ।
आत्मावान, चित्त स्फटिक,
कर्म कालिमा सकल मिटाएँ।
साक्षी बन, वियोग को तोड़,
कर्म पुष्प अर्पण विराट कर,
पूण्य आत्मवन्त न्यास ज्ञान से
साधक सर्व तमो नाश कर।

श्लोक

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः
।। 4/40 ।।

विवेकहीन और श्रद्धारहित संशययुक्त मनुष्य परमार्थ से अवश्य भ्रष्ट हो जाता है। ऐसे संशययुक्त मनुष्य के लिए न यह लोक है, न परलोक है और न सुख ही है।

स्टोरी विद इम्पेक्ट

स्वतंत्रता आंदोलन के समय जब देश संकट में था। अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन को बढ़ाने के लिए धन की कमी होने लगी तब गांधी जी ने पूरे देश से आर्थिक रूप से सहायता करने का आवाह्न किया। गाँधीजी के आवाह्न पर अधिक से अधिक देशवासियों ने आंदोलन को सफल बनाने के लिए अपना योगदान दिया। जब पूरे देश वासियों के धन की गणना करने के लिए गाँधीजी स्वयं बैठे तब उस धन में से एक महिला की बाली के जोड़े में से एक बाली कम थी।

गाँधीजी ने तब अपने सबसे करीबी सहयोगी को बुलाकर इस घटना के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि हमारे पास इतना धन तो आ चुका है एक छोटी-सी बाली के खो जाने से क्या फर्क पड़ता है? गाँधीजी ने इसके प्रत्युत्तर में कहा कि यह धन हमारे देशवासियों की खून-पसीने की कमाई है, और उन्होंने इसे देश के प्रति श्रद्धाभाव से दिया है। इस धन को हम बिल्कुल भी ज़ाया नहीं जाने दे सकते। तत्पश्चात् गाँधीजी ने अपने सहयोगियों से उस बाली को ढूढ़कर लाने को कहा। परंतु सहयोगियों के बहुत ढूढ़ने के बाद भी बाली नहीं मिली। इस सूचना को पाकर गाँधीजी स्वयं बाली को खोजने निकल पड़े। उन्होंने पूरी रात लालटेन के उजाले में बाली को पूरे रास्ते भर खोजा। तब जाकर उन्हें सुबह के चार बजे सभा के मैदान में बाली धूल में मिली। उसे पाकर गाँधीजी बहुत खुश हुए, मानो उन्हें कोई खजाना मिल गया हो। देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों का धन भी गाँधीजी को उस बाली के सामने तुच्छ लग रहा था।

कहानी की प्रेरणा- लोगों की आस्था नही टूटनी चाहिए। महानता का मूल-श्रद्धा और विवेक है।

आठवां दिन

तमस का नाश करने वाली मां कालरात्री

मां कालरात्रि नकारात्मक, तामसी और राक्षसी प्रवृत्तियों का विनाश करके भक्तों को अभय प्रदान करती है। योगी साधकों द्वारा कालरात्रि का स्मरण 'सहस्रार' चक्र में ध्यान केंद्रित करके किया जाता है। साधक के समस्त पाप धुल जाते है। अपने महाविनाशक गुणों से शत्रु एवं दुष्टों का संहार करने वाली सातवीं दुर्गा कालरात्रि है, लेकिन भक्तों पर इनकी असीम कृपा रहती है और उन्हें वह रक्षा प्रदान करती है। मां कालरात्रि दुष्टों का विनाश करने वाली देवी है। इनका रंग काला एवं बाल बिखरे हुए है। इनके तीन नेत्र एवं चार भुजाएं है। गर्दभ इनका वाहन है और ये दाहिने हाथों में तलवार तथा नरमुद्रा एवं बाएं हाथ में ज्वाला तथा मुद्रा धारण करती हैं। ऊपर से भयानक, परंतु अंतराल में स्नेह का भंडार हैं। घने अंधेरे की तरह एकदम गहरे काले रंग वाली, तीन नेत्र वाली, सिर के बाल बिखरे रखने वाली और अपनी नाक से आगे की लपटों के रूप में सांसे निकालने वाली कालरात्री, मां दुर्गा का सातवां विग्रह स्वरूप है।

श्लोक

योगसन्न्यस्तकर्माणं
ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम्।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबन्धन्ति धनञ्जय ।। 4/41 ।।

हे धनञ्जय! जिसने कर्मयोग की विधि से समस्त कर्मों का परमात्मा में अर्पण कर दिया है और जिसने विवेक द्वारा समस्त संशयों का नाश कर दिया है, ऐसे वश में किये हुए अन्तःकरण वाले पुरूष को कर्म नहीं बाँधते।

योगमय कर्म से होगी ज्ञान प्राप्ति

श्रद्धेय कुलाधिपतिजी ने शारदीय नवरात्र के आठवें दिन, गीता के चौथे अध्याय के ४१ वें श्लोक को समझाते हुए ***कर्मयोग द्वारा बंधन मुक्ति*** का वर्णन किया।

जिसने विवेक द्वारा संशयों का नाश कर लिया हो, ऐसे पुरुष को व्यतिरेक बाँध नहीं पाते है। जिस योग के द्वारा इंसान का वियोग टूट जाता है वह ही कर्मयोग कहलाता है। ज्ञान से समस्त संशय छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। जब विवेक के पर छाए बादल छँट जाते है तो ज्ञानरूपी सूर्य का उदय हो जाता है। योग से मनुष्य के कर्मों का न्यास छूट जाता है, जिससे वह आत्मवान हो जाता है।

कर्म की ऊर्जा

प्रत्येक कर्म में दो प्रकार की ऊर्जा होती है-सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा। सकारात्मक अथवा नकारात्मक कर्मबीज मनुष्य के चित्त को ढ़क लेते हैं। मनुष्य का चित्त स्फटिक की तरह निर्मल होना चाहिए परन्तु उसके कर्मों की परतें तथा संस्कारों के जाल चित्त को निर्मल नहीं होने देते। वर्तमान में मनुष्य की स्थिति उस पागल के जैसी है, जो यह नहीं जानता कि वह कहाँ से आया है? और क्या कर रहा है? तथा कहाँ जाएगा?

योग से कर्मपाश क्षीण

आज के समय में केवल आसन, प्राणायाम को योग माना जाने लगा है जबकि यह योग के अंग है। योग केवल आसन नहीं अपितु सम्पूर्ण क्रिया है। वर्तमान में योगासन द्वारा व्यक्ति केवल स्वस्थ होता है परंतु आत्मवान् नहीं बन पाता है।

योग प्रदर्शन नहीं गुह्य दर्शन है। जब तक साधक प्रत्याहार की देहरी पार कर परमात्मा के साथ स्वयं का योग नहीं करता, तब तक योग पूर्ण नहीं होता। एक योगी के अन्दर अपने आत्मस्वरुप को जानने की जिज्ञासा तथा उत्कण्ठा होनी चाहिए। अध्यात्म की सर्वाधिक विलक्षण तत्व साक्षी भाव है। संसार में ईश्वर जीव के साथ कुछ नहीं करते बल्कि सारी घटनाएँ कर्मानुसार होती हैं। योग कर्मों की श्रृंखलाओं को क्षीण करने का कार्य करता है। मनुष्य को पाप-पुण्य की कड़ियों से मुक्त करने का कार्य योग करता है क्योंकि आच्छादन पुण्य का हो अथवा पाप का, मनुष्य को मूल बात समझने नहीं देता। योग के द्वारा मनुष्य की कर्मरुपी अर्गलाएँ (जंजीरें) टूट जाती हैं। जब मनुष्य का चित्त निर्मल हो जाता है, तो उसका अंतःकरण स्वतः ही शुद्ध हो जाता है। उसके मन में आनन्द की हिलोरें उठने लगती हैं।

कर्म को योग बनाना चाहिए

विवेक से मनुष्य के संशय समाप्त हो जाते है। मनुष्य द्वारा किये गये कर्मों का परिणाम लौटकर उसके पास आता ही है। योग द्वारा कर्मनाश होता है। कोई भी मनुष्य कर्म के बिना नहीं रह सकता। एक योगी के पास जिज्ञासा होनी चाहिए, क्योंकि हिमालय वही जा सकता है, जिसके पास हिमालय के शिखर पर चढ़ने की जिज्ञासा, साहस तथा योग्यता हो। कर्मपाश क्षीण होते जाएँ वही योग है। हमें कर्म को योग बनाना चाहिए। किसी व्यक्ति के चेहरे की चमक किसी पद-विशेष की नहीं बल्कि उसके पुण्यकर्मों की होती है। हमारे अन्दर वास्तविक बन्धन मोह है। तन के प्रयास से मन के बन्धन नहीं मिटते।

वास्तविक ज्ञान का पता तन से नहीं मन से चलता है। योग के प्रभाव से संशय क्षीण हो जाते हैं। योग का परिणाम ही ज्ञान है। हमारी मनोग्रन्थियाँ हमारी ऊर्जा को बाँधे रखती हैं। ज्ञानी व्यक्ति कर्मों के पुष्प, परमात्मा को अर्पित कर देता है। ज्ञान से विवेक को क्षय करने वाले सारे तत्व मिट जाते हैं। अशुभ कर्मों को करने वाले व्यक्ति का चेहरा मलीन अर्थात् दुःखी रहता है। शुभ कर्मों को करने वाले व्यक्ति का चित्त निर्मल तथा मन शुद्ध व प्रसन्न रहता है।

चित्तशुद्धि,अंधकार में प्रकाश का प्रवेश

योग के द्वारा कर्मपाश का नाश। योग से हमारे कर्म का न्यास हो जाता है। योग परमात्मा और मनुष्य के मिलन का मार्ग है।

जब मनोग्रन्थियाँ हटती है, जब हमारे अन्दर कुछ नहीं बचता तब हमारे सारे कर्म प्रभु से जुड़ जाते हैं। प्रभु से मिलन में आने वाले अवरोधों को हटाने का नाम ही योग है। योग तथा ज्ञान मिलकर मनुष्य को आत्मवन्त बना देते हैं। निष्काम भाव से चित्त को अहंकार से दूर करना ही योग है।

ले ज्ञानरूपी तलवार, निज उर बैठी ग्रंथि निरवार

श्रद्धेय कुलाधिपतिजी ने शारदीय नवरात्र के नौवें दिन, गीता के चौथे अध्याय का [illegible]वें श्लोक को समझाते हुए ज्ञान से पवित्रता का वर्णन किया।

ज्ञान के शिखर पर पहुँचने पर अहंकार की ग्रन्थियां जल जाती हैं। मनुष्य के हृदय में भांति-भांति के संशय होते हैं जो हृदय में स्थित संशय अनुभूतियों को प्रकट नहीं होने देती हैं। अनुभूति में भ्रान्ति आ जाने पर हमारी धारणा और संशय जीवन का गणित गड़बड़ कर देते हैं। चित्त की अशुद्धि के कारण मन में भ्रान्ति उत्पन्न हो जाती है। अनुभूतियों के द्वार को रोके हुए संशय को ज्ञानरूपी तलवार द्वारा काटा जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति ने कोई त्याग का कार्य किया हो तो उसमे अंहकार नहीं आना चाहिए। जब अहंकार का राज्य समाप्त हो जाता है, तो आत्मराज का उदय होता है।

संशयात्मा विनश्यति -

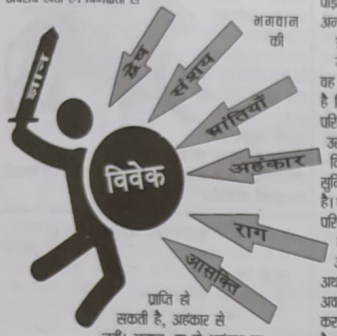

मन में स्थित संशय, आत्मा का विनाश कर देते हैं। मनुष्य का अहंकार उसका महाभ्रम है। अहंकार ज्ञान का अन्तिम अवरोध होता है। विनम्रता से भगवान की प्राप्ति हो सकती है, अहंकार से नहीं। अज्ञान, या तो अहंकार का या फिर आसक्ति का रूप ले लेता है। मन से संशय को दूर करने के लिए वियोग से योग की ओर चलना चाहिए श्रीकृष्ण गीता के माध्यम से कहते हैं-हृदय की गांठे खोलकर ज्ञान द्वारा संशय और अहंकार का भेदन करो। मनुष्य में जब संशय होगा तो उसमें विभिन्न तरह की भ्रांतियाँ होगी। मनुष्य को संशय, भ्रम, घृणा तथा ईर्ष्या ने अज्ञानता के अंधेरे में जकड़ लिया है।

जो परिस्थिति से प्रभावित न हो वही ज्ञानी होता है तथा जो परिस्थिति से प्रभावित हो जाए सांसारिक है। यदि मनुष्य के मन की गांठे खुल जाएंगी तो उसका संशय तत्क्षण खत्म हो जाएगा। स्वयं को योग के शिखर पर स्थापित कर दो। आध्यात्मिकता के हिमालय पर स्थापित हो जाना ही योग है। मनुष्य को अपने कर्मों से भगवान की अर्चना करनी चाहिए। स्वयं को संशयों से मुक्त करके ज्ञान में स्थित हो जाओ। अज्ञान ही अवसाद, विषाद, पीड़ा, पतन, दोष तथा दुर्गुण है। ज्ञान में आनंद व अज्ञान में अनंत अवसाद है।

ज्ञान की अनुभूति

जो चित्त को ऊँचा उठाए अर्थात् उसे शिखर पर स्थापित करे वह ज्ञान है। ज्ञान की अनुभूति की दो धाराएं होती हैं। एक भाव है जिससे कि संसार के सभी संबंधों के ज्ञान का आकाश परिलक्षित होता है। दूसरा विचार है जो कि भाव से प्राप्त होकर उसकी अभिव्यक्ति करता है। विचार व भाव ही वे शब्द हैं जो कि संसार की सामाजिक प्रक्रिया में हमारी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। जीवन की चार अवस्थाओं से होकर गुजरता है। पहली अवस्था जाग्रत होती है जो कि इन्द्रियों के अनुभूति से परिपूर्ण होती है। दूसरी अवस्था है स्वप्न जिसमें हमारा शरीर तो सोता है पर हमारा मन उस समय क्रियाशील रहता है। तृतीय अवस्था सुसुप्ति की होती है जिसमें शरीर व मन दोनों सोते हैं। अर्थात् हम पूरी तरह से विचरण की अवस्था में होते हैं। अंतिम अवस्था तुरीया होती है जिसमें कि मानव गहरी शांति का अनुभव करता है और गहराई से वह जागरण के क्षण का अहसास करता है।

नीति, नियति व निमित्त का ज्ञान

हमारी धारणाएं, हमारी पूर्वाग्रह हमारी भ्रांतियां जीवन के पूरे गणित को बिगाड़ देती हैं फलस्वरूप हम शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों से बिखर जाते हैं। तब हमें नीति, नियति व निमित्त का ज्ञान होना आवश्यक है अतः आवश्यक है कि जो नियति को स्वीकार हो उसे स्वीकार करें। जिस तरह से हमारे सामाजिक जीवन में कलह, द्वंद, युद्ध रूप में हमेशा अशांति फैलाते हैं, ठीक उसी तरह अज्ञान हमेशा हमारा नाश करता है। अतः आवश्यक है कि अपने जीवन में त्याग को उतारा जाए और सामाजिक जीवन के साथ मानसिक जीवन में भी शांति की स्थापना की जाए। लेकिन आवश्यक यह है कि जो त्यागव्रत हम अपना रहे है उसका

अहंकार न किया जाए क्योंकि यह हमेशा विनाश के मार्ग पर ले जाएगा। अहंकार का राज्य अधिक दिनों तक नहीं चलता है। अहंकार महाभ्रम है, भगवान कभी भ्रम से नहीं मिलते उन्हें पाने के लिए भक्ति, विनम्रता का होना जरूरी है।

ज्ञान की साधना

हमारे कर्मबंधन का फल ही हमें शुभ व अशुभ कर्मों के रूप में हमारे सामने आता है। नैतिकता समाज की स्वीकारोक्ति होती है लेकिन आध्यात्मिकता हमारे अंतरमन की स्वीकारोक्ति होती है। अहंकार किसी को भी हो सकता है इसलिए इसका सबसे सटीक समाधान है ज्ञान का होना। ज्ञान से ही शांति व संतोष की अनुभूति होती है। संसार में किसी भी समस्या का समाधान करना है तो उन बिन्दुओं पर ध्यान दो जहां पर अटके हो। समाधान के समय किसी के प्रति कभी आसक्ति मत रखो यह हमेशा गलत राह दिखाती है। अगर हमें समाधान खोज कर अखंड के साम्राज्य में पहुंचना है तो हमें पहले समस्या के आकार को भेदना होगा। और यह ज्ञान से ही संभव है। भगवान कहते हैं कि मेरे लिए सभी बराबर हैं जिस दिन यह भाव हमारे हृदय में आ गया उस दिन हमारी सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

सभी सिद्धियाँ प्रदान करने वाली मां सिद्धिदात्री

दुर्गा की नवीं शक्ति का नाम है सिद्धिदात्री। यह सिद्धि को देने वाली हैं। जो भी श्रद्धालु पूरी निष्ठा के साथ इनकी उपासना करता है, उसे सभी सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। इनकी साधना करने से सांसारिक इच्छाओं, आवश्यकताओं, लौकिक और परलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। नवरात्र के नौवें दिन अन्य आठ दुर्गाओं की पूजा, उपासना शास्त्रीय विधि अनुसार करते हुए भक्त मां सिद्धिदात्री के सामने अपनी मंगल कामनाओं के लिए प्रार्थना पूर्वक नमस्कार करते हैं। हवन आदि करके इस दिन सपरिवार माता की आरती करें।

सुख-संपदा की देवी महागौरी

अष्टमी के दिन मां गौरी की पूजा और आराधना ठीक उसी प्रकार कल्याणकारी है, जिस प्रकार अंधेरे में घिरे हुए संसार के लिए भगवान सूर्य की एक किरण। नवरात्रि में दुर्गाष्टमी व नवमी की कल्याणप्रद, शुभबेला श्रद्धालु भक्तजनों को मनोवांछित फल प्रदान करती है। इनकी आराधना से शरीर में उत्पन्न नाना प्रकार के रोग, शोक, व्याधि आदि का अंत हो जाता है। इनका विग्रह भक्तों को तुरंत अमोघ फल देता है। इनकी कृपा से साधक सभी प्रकार से पवित्र और अक्षय पुण्यों का अधिकारी हो जाता है। मां की भक्ति से हमें मन की शांति मिलती है।

श्लोक

तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं
ज्ञानासिनात्मनः।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ।।4/42।।

इसलिए हे भरतवंशी अर्जुन! तू हृदय में स्थित इस अज्ञानजनित अपने संशय का विवेक ज्ञान रूप तलवार द्वारा छेदन करके समत्वरूप कर्मयोग में स्थित हो जा और युद्ध के लिए खड़ा हो जा।

स्टोरी विद इम्पेक्ट

ऋषभदेव भारतीय संस्कृति में भगवान के रूप में पूजे जाते है। वे सम्पूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी थे। भरत और बाहुबली उनके पुत्र, सुंदरी और ब्राह्मी उनकी पुत्री थी। ऋषभ देव ने राज्य का बड़ा भाग बड़े पुत्र भरत को और दूसरा भाग बाहुबली को दिया । दोनों अच्छे राजा की तरह कुशलता से अपने-अपने राज्यों को चला रहे थे। कुछ समय बाद राजा भरत के मन में चक्रवर्ती सम्राट बनने का विचार आया, जिसके लिए उन्होंने देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में अश्वमेध अनुष्ठान चलाया। जब दिग्विजय अपने अंतिम चरण में थी, तभी अचानक चक्र रूक सा गया। मंत्रियों ने बताया कि आपका विजय चक्र तब तक रूका रहेगा, जब तक आप अपने भाई बाहुबली के राज्य को जीत नहीं लेते। राजा भरत ने प्रत्युत्तर में कहा कि वो तो मेरा भाई है वो राज्य तो मेरा ही है। तभी मंत्रियों ने कहा कि बिना बाहुबली के राज्य को जीते आप सम्राट तो कहलाएंगे किंतु चक्रवर्ती सम्राट नहीं। राजा भरत ने इस बात को स्वीकारते हुए कहा कि अगर ऐसी बात है तो बाहुबली को संदेश भिजवा दो कि वह अपना राज्य स्वेच्छा से दे दें या फिर मुझसे युद्ध करने के लिए तैयार हो जाए। बाहुबली ने यह समाचार सुनकर कहा कि अगर वह बड़े भाई के भांति राज्य हासिल करना चाहे तो ये राज्य उनका ही है लेकिन अगर राजा के भांति आयेंगे तो मुझे भी राजधर्म के पालन हेतु युद्ध करना पड़ेगा। युद्ध के दिन जब दोनों सेनाएं आमने-सामने थी, तभी दोनों राज्यों के मंत्रियों ने सलाह दी कि ये युद्ध दो राज्यों का नहीं दो भाईयों का है। तो सेना के रक्तरंजित करने से क्या लाभ होगा, आप दोनों आपस में ही लड़कर इस युद्ध का फैसला करें। इस बात को दोनों भाईयों ने स्वीकारते हुए युद्ध को प्रारंभ किया। युद्धक्षेत्र में कोई भी युद्धक्रिया उनकी जीत-हार का फैसला नहीं कर पा रही थी। तब अंत में फैसला हुआ कि मल्ल युद्ध में जिसकी जीत होगी वही चक्रवर्ती सम्राट होगा। शारीरिक रूप से बाहुबली, भरत से अधिक बलशाली थे। मल्ल युद्ध में बाहुबली ने भरत को आसमान में उठाये हुये थे, उनकी जीत उनके सामने थी तभी उनके मन में विचार आया कि यह युद्ध किस लिए हो रहा है? और उन्होंने अपने भाई को विनम्रतापूर्वक नीचे उतारा और उनको प्रणाम करते हुये कहा कि यह राज्य आपका है। जिस राज्य के लिए हमने अपने पिता की परंपरा को भुला दिया ऐसा राज्य किस काम का? मैं तपस्या के लिए वन जा रहा हूँ आज से आप ही चक्रवर्ती सम्राट हैं। कुछ समय बाद भरत ने अपना राज्य अपने पुत्रों को सौंपकर सन्यास धारण कर लिया। भरत और बाहुबली दोनों ने कठिन तप किया। भरत ने अपने पिता से दीक्षा ली और कैवल्य ज्ञान को प्राप्त करते हुए समाधि के आनंद में डूब गये। परंतु बाहुबली को ज्ञान प्राप्ति नहीं हुई। बाहुबली को खेद हुआ कि परमात्मा की अनुभूति उन्हें क्यों नहीं हुई और इसका कारण अपने पिता से जानना चाहा। तब उन्हें पता चला कि वह त्यागरूपी अहंकार के सिंहासन से अभी तक उतरे नहीं है, उन्हें यह अहंकार है कि उन्होंने अपने सिंहासन को त्याग कर सन्यास का मार्ग चुना। वहीं दूसरी ओर उनके भाई भरत को पश्चाताप और ग्लानि थी कि उन्होंने अपने भाई के साथ अच्छा नहीं किया और इसी कारण उन्हें कैवल्य की प्राप्ति हुई। तत्पश्चात बाहुबली ने ज्ञानरूपी तलवार से अपने संशयों और अहंकार को काटकर कैवल्य की समाधि को प्राप्त किया।

कहानी की प्रेरणा - अहंकार त्याग का भी होता है। इसलिए त्यागरूपी अहंकार की ज्ञान प्राप्ति की अंतिम बाधा है।

ट्रैंडिंग नवरात्र

देशभर में जहां नवरात्र का त्यौहार धूमधाम से मनाया जा रहा है वहीं गुजरात के अहमदाबाद शहर में एक अनूठी पहल चलायी जा रही है। अंग्रेजी समाचार पत्र टाइम्स ऑफइंडिया के आंकडों के अनुसार गुजरात में 1000 पुरूषों पर 919 महिलाएं हैं, जबकि 1000 लडकों पर 0-6 वर्ष तक आयु की 886 लडकियां हैं। इन चिंताजनक आंकडों को देखते हुए अहमदाबाद के सद्विचार विकास संघ की उपाध्यक्षा पूनम पंचानी ने कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ दुर्गा माता के इस नौ दिवसीय पर्व पर एक अभियान चलाया है। इस अभियान के अंतर्गत गरबा नृत्य के माध्यम से गुजरात में तेजी से घटते लिंगानुपात के प्रति जागरूकता फैलाने का काम कर रही हैं और साथ लोगों से लडकियों को बचाने और उन्हें पढ़ाने का आग्रह कर रही हैं। वास्तव में सच्चे अर्थों में नवरात्र मनाने का यह सार्थक माध्यम है।

गुजरात में नौ दिन किये जाने वाले नृत्य गरबा को गरबी और गर्भा दीप भी कहा जाता है। गर्भा संस्कृत शब्द गर्भदीप से बना है,जिसमें गर्भा का अर्थ है गर्भ और दीप का अर्थ है मिट्टी के दीपक। गर्भा दीप के चारों ओर नृत्य किया जाता है, जोकि जीवन को माता के गर्भ में भ्रूण के समान दर्शाता है। ऐसा माना जाता है चूंकि गरबा गोल घूमकर किया जाता है तो यह हमारे जीवन चक्र को दर्शाता है जो मृत्यु से पुनर्जन्म तक चलता ही रहता है। दुर्गा माँ ही स्थिर, अपरिवर्तनीय, अजेय रहती हैं। इसी भाव के साथ गरबा नृत्य के माध्यम से दुर्गा माँ की अराधना की जाती है। गरबा समूह नृत्य है जिससे पूरा वातावरण उत्साह, सकारात्मकता एवं पवित्रता' से भर जाता है।

भारत की विविधता की तरह नवरात्र का त्यौहार बहुत ही विभिन्नता के साथ मनाया जाता है। भारत के विभिन्न राज्यों में नवरात्र का यह त्यौहार अलग-अलग परम्परागत तरीको से मनाया जाता है। भारत के पूर्विय राज्य पश्चिम बंगाल,असम एंव बिहार में नवरात्र बहुत ही धुमधाम से मनाया जाता है जहां नवरात्र के आखिरी चार दिनों में विशेष रुप से मां दुर्गा के महिषासुर के मर्दिनी रुप की पुजा की जाती है। वहीं गुजरात में अस्विन नवरात्री का यह त्योहार मां शक्ति की आरती एंव डाडिया और गरबा के लिए प्रचलित है। इससे अलग तमिलनाडु में मां के तीन रुप दुर्गा सरस्वति एंव लक्ष्मी की पूजा की परम्परा है, पूजा के साथ के बाद वहां खास कोलू परम्परा निभाई जाती है जिसके अंर्तगत घर की सिढियों को पिढ़ियों से पुजीत गुड़ियो से सझाया जाता है। वहीं अगर आन्ध्रप्रदेश की बात की जाएं तो वहां नारी शक्ति स्वरुपा महागौरी की पूजा बतुकमां पण्डुगा त्यौहार के रूप में की जाती है। और केरला राज्य में नवरात्री को शिक्षा एंव ज्ञान के साथ जोड़कर विद्या की देवी मां सरस्वती का पूजन किया जाता है। वहीं कर्नाटका में नवरात्री को मदाहब्बा त्यौहार के रुप में मनाया जाता है, जिसे 1610 ईसवीं के विजयनगर वंश की परम्परा से लिया गया है। महाराष्ट्र के लिए नवरात्री नई शुरुआत की सूचक है, जहां सभी विवाहित स्त्रियां हल्दी-कुमकुम की परम्परा के साथ नवरात्र का पूजन करती है। वहीं देवभूमि हिमाचल प्रदेश में दसवें दिन विशेष पूजन के साथ 7 दिन का कुल्लू दशहरे का क्रम चलता है, जिसमें घाटी के सभी देवी-देवता रघुनाथ श्री राम जी को श्रद्धा अर्पण करते हैं।

साहस और शक्ति की प्रतीक माँ दूर्गा की पूजा नवरात्र के दिनों में देशभर में बड़े श्रद्धा भाव से मनाया जा रहा है। माँ की पूजा और अर्चना के लिए जगह-जगह पंडाल सजाए जा रहे हैं। इसी बीच दिल्ली के मारूती विहार सार्वजनिक दुर्गोत्सव समिति ने अपने पंडाल की थीम इण्डिया लेट हर लिव - सेव द गर्ल चाईल्ड रखकर समाज को बेटीयों को बचाने एवं पढ़ाने का संदेश दिया है। समिति इसके माध्यम से भारत में विशेष रूप से हरियाणा राज्य कीं लड़कियों की चिन्ताजनक स्थिति एवं कन्या भ्रूण हत्या के प्रति जागरूकता फैलाने की कोशिश कर रही है। प्रदर्शनी में विभिन रचनात्मक कलाकृतियों के माध्यम से रोचक तरिके से जागरूकता फैलाने के साथ प्रेरणा देने का भी काम किया जा रहा है। समाज को बुराई से अच्छाई की ओर रूपांतरित करने के साथ माननीय प्रधानमंत्री के बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम से प्रेरित होकर दिल्ली के कई और पंडालो में भी इसी थीम को दर्शाते हुए लोगों को प्रेरित करने का प्रयास किया है।

नवरात्र भारत के प्रमुख आध्यात्मिक उत्सवों में सबसे प्रमुख है। आदिशक्ति की अराधना का पर्व पूरे देश में बड़े श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। देशभर में भक्तगण मां की पूजा के लिए विभिन्न तरहके पण्डालों और गरबा आदि का आयोजन करते हैं। दुर्गा सामूहिक शक्ति का आदर्शतम उदाहरण है इसलिए भी नवरात्र महत्वपूर्ण है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, पूरे देश में एक मात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जहां सभी छात्र-छात्राएं नौरात्र के दौरान प्रतिदिन सामूहिक यज्ञ, सामूहिक जप और सामूहिक नादयोग करते हैं, इसी के साथ विधार्थी स्वेच्छा से एक समय का उपवास और गायत्री मंत्र लेखन का नौ दिन तक निरंतर अभ्यास भी करते हैं। नवरात्र यहाँ एक अध्यात्मिक उत्सव की तरह मनाया जाता है। नवरात्र की यह परंपरा विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही अनवरत जारी है। कुलाधिपति के भाव भरे आह्वान पर प्रत्येक दिन विश्वविद्यालय का एक विभाग इस नौ दिवसीय साधना को करवाने का जिम्मा संभालता है, साथ-साथ ही साथ करता भी हैं। कुलाधिपतिजी की नवरात्र की विशेष कक्षाओं से विधार्थियों को आदिशक्ति के दर्शन के साथ गीता का ज्ञान भी दिया जाता है। नवरात्र की विशेष कक्षाएं कुलाधिपतिजी द्वारा ली जाने वाली गीता एवं ज्ञान की नियमित कक्षओं की विशेष कड़ी है।

इस बार कि शारदीय नवरात्रि नौ नहीं ब्लकि दस दिन मानाई गई। इन 10 दिनों के नवरात्रि में तृतीया 2 दिन मनाया गया, जिसमें दो दिन मां ब्रह्मचारिणी को पूजा गया। 427 साल बाद नवरात्रि का यह शुभ संयोग बेहद विशेष है। इसके अलावा जिन संयोगों में इस बार नवरात्र पड़े, वह अब तक के बीते 427 साल तक के पंचांग में नहीं पड़ा। इसके पहले यह संयोग 1589 में बना था और इसके बाद फिर यह संयोग 450 वर्ष बाद बनेगा। ये संयोग अद्भुत हैं। जानकारों का मानना है कि पितृपक्ष का घटना और नवरात्रि के दिनों का बढ़ना बेहद शुभ संकेत होता है। ये शुभ-लाभ तथा आरोग्य प्रदान करता है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में होने वाली नौ दिवसीय नवरात्र साधना में गीता की विशेष कक्षाओं की अहम भूमिका है, विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वयं प्रतिदिन विद्यार्थियों को स्वाध्याय के माध्यम से गीता का अमूल्य ज्ञान देते हैं। इन कक्षाओं का क्रम 12 साल से लगातार चल रहा है, जिसमें अभी तक लगभग 234 विशेष कक्षाएं हो चुकी है। चैत्र नवरात्रि में रामचरित मानस व शारदीय नवरात्रि में श्रीमद्भागवत गीता की विशेष कक्षा चलती रही है। इस बार के शारदीय नवरात्र की कक्षाओं के स्वाध्याय का विषय गीता के 4 अध्याय के 34 से 42 श्लोक है, जिसमें ज्ञान की महिमा के बारे में बताया जा रहा है। और साथ ही साथ सत्संग भी कराया जा रहा है। इसके अलावा अभी तक विभिन्न विषय जैसे देवी सप्तसती, मानस के चार घाट, नौदा भक्ति, मर्यादापुरूषोत्म श्री राम जैसे विशेष विषयों की व्याख्या हो चुकी है। इन सभी कक्षाओं से विद्यार्थिओं को जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, प्रोत्साहन, एकाग्रता, संयमता एवं व्यवहारिक जीवन कि समस्याओं का समाधान मिलता है।

GLORY OF GYANA

The Knowledge Capsule from the Special Navratra Geeta classes of

H.H. Shraddhey Dr. Pranav Pandya

- ☐ Existence of knowledge and darkness together is impossible.
- ☐ Good deeds and positivity drive out ignorance and darkness.
- ☐ The acts done under the influence of ignorance is sin.
- ☐ Knowledge is the awakening from the sleep of ignorance.
- ☐ Desires are the root cause of a man's degradation.
- ☐ The imbibing of knowledge into ones behavior frees us from all sins.
- ☐ Attachment is the root cause of all the sins.
- ☐ The reins of our life are guided by the condition(positive/negative) of our soul.
- ☐ Even the most wretched sinner can sail through the tough times by sailing in the boat of knowledge.
- ☐ Getting over our likes and dislikes leads us on the path of becoming a true disciple
- ☐ Actions+Determination+Desires+Emotions=Deeds
- ☐ Ignorance is a mirage, it binds us. It makes us commit mistake and makes us suffer.
- ☐ An ignorant mind is the greatest sufferer.
- ☐ Awakened Knowledge is not just bound to words.
- ☐ Gyaani is unaffected by pleasure or sorrow.
- ☐ The one who has knowledge is pious in true sense.
- ☐ The piousness of the soul is the sign of true enlightened.
- ☐ Sun, Ganges, Himalayas are the Sign of piousness.
- ☐ Piousness doesn't depends on caste but rather on our deeds.
- ☐ Faith is the boundless love to the ideal.
- ☐ Faith is the basis of knowledge and ultimate peace.
- ☐ Devotion is being truthful towards your ideal and your duties.
- ☐ Knowledge is experience and it has a direct connection with our emotions.
- ☐ Devotion leads to purity of emotions.
- ☐ Devotion gives ability to service and surpass the adversities.
- ☐ Piousness doesn't comes from just cleaning the physical body, but from cleaning our thoughts and driving out the darkness of the inner soul.
- ☐ Repetition of our confessions leads to obsession.
- ☐ Adorable faith and discriminatory wisdom are the two pillars of Spirituality.
- ☐ Faith is the power house of strength.
- ☐ Lack of faith leads to the peak of doubt and ultimately self-destruction.
- ☐ Faith in action is dedication to the cause.
- ☐ Faith is the stability and strength of pure emotions.
- ☐ Faith and wisdom leads a person from simple human being (NAR) to divine being (NARAYAN).